



सिक्कुरिटीज ँड ँक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया

सेवा—निवृत्ति हेतु निवेश योजना





सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया

“यह पुस्तक सिक्योरिटी एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) के इन्वेस्टर प्रोटेक्शन एंड एजुकेशन फंड (आईपीईएफ) की सलाहकार समिति के मार्गदर्शन में एमसीएक्स स्टॉक एक्सचेंज और एफटी नॉलिज मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड (एफटीकेएमसी) द्वारा तय की गई है।

(ग्राफिक्स और प्रिंट डिजाइन – एमसीएक्स-एसएक्स एवं एफटीकेएमसी)

चेतावनी : वित्त शिक्षा की दिशा में सेबी की यह पहल जन सामान्य को मूलभूत सूचनाएं उपलब्ध कराने के लिए हैं। सुरक्षा कानूनों, नियमों, विनियमों, दिशानिर्देशों एवं अन्य निर्देशों से संबंधित विशेष जानकारियों के लिए www.sebi.gov.in पर जाएं।

प्रकाशक : सिक्योरिटी एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी)

सेबी भवन, प्लॉट नं. – सी4-ए, जी ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्पलेक्स, बांद्रा (ईस्ट)

मुंबई – 400051, दूरभाष : 91-22-26449000 / 40439000 / 9114

फैक्स : 91-22-26449027 / 40459027, ईमेल : feedback@sebi.gov.in

इस पुस्तक में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि गलतियां या अशुद्धियां न रहने पाएं। तब भी यदि किसी प्रकार की गलती, अशुद्धि अथवा विसंगति पाई जाएगी तो इसे अगले संस्करण में दुरुस्त कर लिया जाएगा। यह भी घोषित किया जा रहा है कि इस सामग्री के किसी भी उद्देश्य के लिए और किसी भी रूप में उपयोग के दौरान यदि कोई क्षति अथवा हानि होती है तो प्रकाशक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होगा।

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी माध्यम अथवा रूप में (ग्राफिक या यांत्रिक, जैसे कि छायांकन, ध्वन्यांकन, रिकॉर्डिंग अथवा सूचना संग्रहण की किसी भी अन्य विधि से) पुनरुत्पादन अथवा प्रसार नहीं किया जा सकता। ऐसा होने पर कानूनी कार्रवाई की जा सकती है।

मुख्य उद्देश्य :

इस पुस्तिका को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित विषयों को समझ पाने में सक्षम होंगे

- ☐ निवेश योजना की आवश्यकता
- ☐ निवेश से संबंधित आपके निर्णय की वित्तीय उलझनें
- ☐ भारतीय वित्त बाजार में मौजूद निवेश के विभिन्न रास्ते
- ☐ आपके वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने की निवेश कौशल
- ☐ व्यक्तिगत शुद्ध लाभ और वार्षिक बजट की गणना

विषय क्रम

1. विषय प्रवेश
2. सेवा-निवृत्ति योजना
3. वित्तीय योजना
4. सुव्यवस्थित लक्ष्य
5. बचत और निवेश
6. निवेश के विरुद्ध ऋण
7. व्यक्तिगत बजट का गणक
8. व्यक्तिगत शुद्ध लाभ का गणक
9. आय के विरुद्ध जोखिम
10. नियोजन
11. निवेश पर महंगाई का प्रभाव
12. निवेश के नियम
13. निवेश के साधन
14. निवेश के धोखे से बचाव
15. संपत्ति योजना
16. सार-संक्षेप
17. स्रोत-सामग्री
18. सेबी कार्यालयों का वैधानिक अधिकार क्षेत्र

1 विषय प्रवेश

आपने अपने जीवन के कई चरणों को सफलतापूर्वक पार किया होगा। इस जीवन पथ पर कई तरह की मुश्किलें आई होंगी, कई उतार-चढ़ाव भी आए होंगे। अब आप एक नए चरण में प्रवेश कर रहे हैं – और वह है सेवा-निवृत्ति। सेवा-निवृत्ति का तात्पर्य सेवा से निवृत्ति है जीवन से नहीं। जैसे आप किसी तीव्रगामी मार्ग को बदलकर कम गति वाले मार्ग पर आ जाते हैं, वहां सफर कुछ ज्यादा ही आरामदायक, रमणीक और आनंददायक बन जाता है। यह किसी के भी जीवन का एक अलग चरण ही तो है।

अधिकांश लोगों के लिए नियमित आय का स्रोत है वेतन, जो मासिक तौर पर उन्हें प्राप्त हुआ करता है। आय की इस निरंतरता के बाद भी अपने सेवाकाल में हम आमतौर पर अपने खर्चों का नियोजन करते हैं ताकि आय के साथ एक संतुलन बना रहे। जैसे-जैसे हम सेवा-निवृत्ति के करीब पहुंचने लगते हैं, हम अपनी आमदनी और खर्चों के बारे में अभ्यस्त होते चले जाते हैं और सेवा-निवृत्ति के बाद इनमें कोई बड़ा परिवर्तन नहीं आता। सेवा-निवृत्ति के दौरान अथवा इसके कुछ समय पहले हमें अपनी सेवा-निवृत्ति की बचतों के लिए किसी योजना की आवश्यकता महसूस होने लगती है। आमतौर पर हम इस दिशा में संलग्न हो जाते हैं कि अपनी पेंशन निधि और अन्य बचत को लेकर ऐसा क्या किया जाए जिससे हमें आने वाले समय में कोई परेशानी न हो। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हर संबंधित व्यक्ति इसी निष्कर्ष पर पहुंचता है कि वह कोई ऐसी वित्तीय योजना तय करे जिसकी सहायता से वह न केवल अपनी जीवनशैली को बनाए रख सके, बल्कि वित्तीय तौर पर एक आत्मनिर्भरता की स्थिति भी बनी रहे।

2. सेवा-निवृत्ति योजना

सेवा-निवृत्ति योजना से जुड़े कई कारक हैं और इसकी शुरुआत के लिए कितना भी समय पर्याप्त नहीं होता। पूर्णतः सेवा-निवृत्त हो जाने के पूर्व ही आपके लिए यह आवश्यक है कि आप अपने सेवा-निवृत्ति लक्ष्यों एवं जरूरतों को परिभाषित कर लें और तदनुसार कोई समुचित सेवा-निवृत्ति बचत योजना प्रारंभ कर लें।

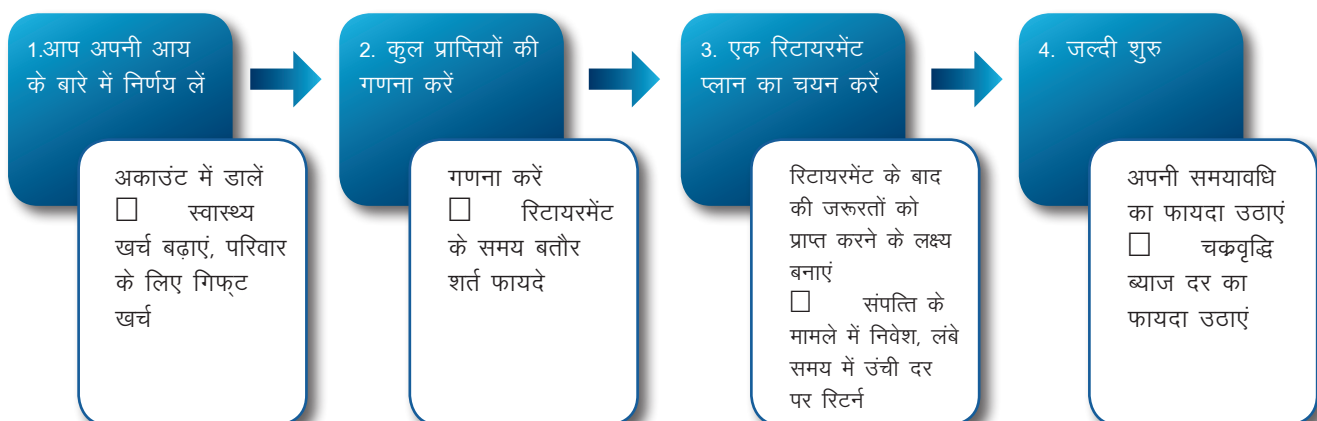
एक आदर्श सेवा-निवृत्ति योजना तक पहुंचने के लिए आप निम्नलिखित चार साधारण कदमों का अनुसरण कर सकते हैं।

पहला कदम – तय करें कि सेवा-निवृत्ति के पश्चात प्रतिवर्ष चिंतामुक्त होकर जीने के लिए आपको कितनी आमदनी की जरूरत पड़ेगी। कुछ विशेष प्रकार के खर्चों का निश्चित रूप से ध्यान रखें जैसे कि स्वास्थ्य व्ययों में संभावित वृद्धि और परिवार के लिए उपहार आदि जैसे खर्च।

दूसरा कदम – सेवा-निवृत्ति के समय प्राप्त होने वाली राशि (सेवांत लाभ) का यथासंभव आकलन करने का प्रयास करें।

तीसरा कदम – किसी सटीक सेवा-निवृत्ति योजना का चुनाव कर लें जो सेवा-निवृत्ति के पश्चात आपकी जरूरतों को पूरा करने में आपको सक्षम बना सके। बेहतर होगा कि आप परिसंपत्ति श्रेणियों में निवेश का चयन करें जो लंबे समय तक आपको अपेक्षाकृत अधिक लाभ दिला सकेंगे।

चौथा कदम – जितनी जल्दी संभव हो निवेश प्रारंभ कर दें ताकि आपके पास पर्याप्त समय रहे और आप नियोजन की शक्ति का पूरा उपयोग कर सकें।



कितनी सेवा-निवृत्ति आय की मुझे जरूरत है?

यहां हम एक ऐसा आसान तरीके के बारे में जानेंगे जिसकी सहायता से हम अपनी सेवा-निवृत्ति पूर्व की आय का 70 से 80 प्रतिशत तक प्रतिस्थापन कर सकते हैं। यदि एक महीने की आपकी आमदनी (टैक्स छोड़कर) 20,000 रुपये है तो सेवा-निवृत्ति के बाद उसी स्तर की जीवनशैली कायम रखने के लिए आपको हर महीने कम से कम 15,000 से 18,000 रुपये की आवश्यकता होगी।

सेवा-निवृत्ति जमा का आकलन

सेवा-निवृत्ति की आयु	60
वर्तमान आय	58
जीवन संभावना	83
सेवा-निवृत्ति के पश्चात वर्ष	23
वर्तमान वार्षिक व्यय	1.80 लाख रुपये
निवेश पर औसत लाभ	12%
स्फीति	5%
स्फीति आधारित लाभ	7%
कुल वांछित सेवा-निवृत्ति आय	— 15 लाख रुपये

मुख्य बिंदु : सेवा-निवृत्ति की तैयारी कैसे करें?

- 1 शुरुआत करने के लिए कभी बहुत देर नहीं होती। देर केवल तब होती है जब आपा फौरन शुरुआत नहीं करते।
- 2 अपनी सेवा-निवृत्ति योजनाओं और व्यक्तिगत बचतों के अंतर्गत वह सब कुछ जमा कर दें जो आप कर सकते हैं।
- 3 खर्चों को कम करें और बचत का निवेश करें।
- 4 उच्चतम आय तथा कर बचतों का लक्ष्य रखें। जहां सुविधाजनक न लगे वहां बिल्कुल भी निवेश न करें।
- 5 अपने लक्ष्यों का सूक्ष्म परीक्षण करें। सेवा-निवृत्ति के पश्चात आपकी जीवनशैली कम खर्चीली होनी चाहिए।
- 6 ऐसी परिसंपत्तियां जो लाभकारी नहीं हों, उनको बेच दें और लाभकारी परिसंपत्तियों में निवेश करें।

ध्यान रखें कि 15 लाख रुपये की यह निधि आपकी सेवा-निवृत्ति की शुरुआत के लिए पर्याप्त हो सकती है, पर यह आने वाले दिनों में भी पर्याप्त रहे यह आवश्यक नहीं है क्योंकि सेवाओं और वस्तुओं में मूल्यवृद्धि के कारण आपके खर्चे बढ़ सकते हैं।

3. वित्तीय योजना

“एक पौधा लगाने का सबसे उपयुक्त समय बीत हुआ कल होता था। अगला सबसे उपयुक्त समय आज है।”

वित्तीय योजना आपके वित्त के समुचित प्रबंध के माध्यम से आपको आपके जीवन लक्ष्यों तक पहुंचाती है। यह आपके भविष्य में उत्पन्न होने वाली वित्तीय जरूरतों के हिसाब से कुछ अग्रिम उपाय करने में आपकी मदद करती है। वित्तीय योजना का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी व्यक्ति के जीवन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भविष्य में वांछित समय पर अपेक्षित राशि उसे उपलब्ध रहे।

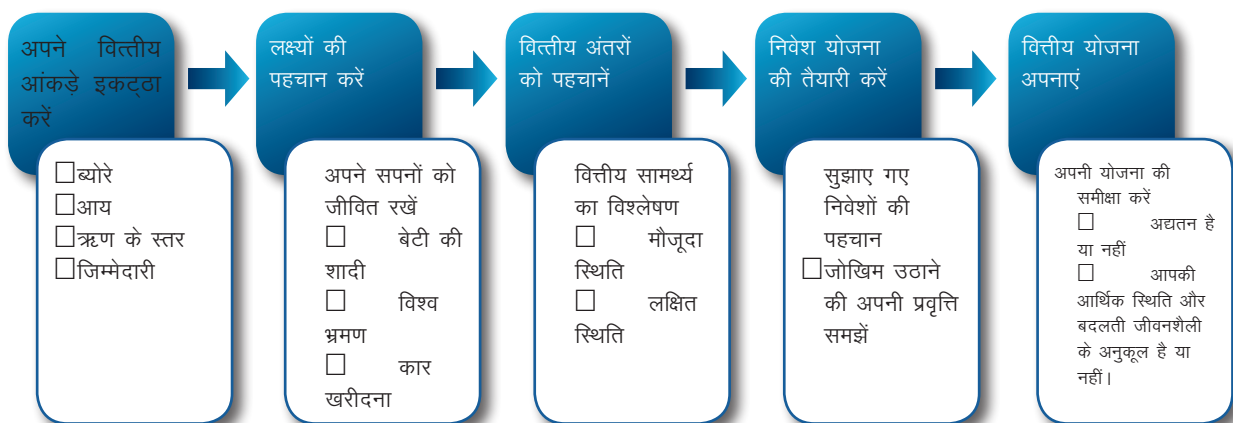
निवेश योजना

वित्तीय और निवेश योजना के कारक हैं, जो विनिमय रूप से किसी व्यक्तिगत वित्त शब्दावली अंतर्गत उपयोग में आते हैं। इन दोनों की अवधारणाओं में निहित अंतर को समझने के लिए हमें सबसे पहले उन्हें अच्छी तरह समझ लेना होगा। निवेश योजना का मूल तत्व है उसमें निहित “लाभ की दर” निवेश योजना प्रक्रिया कई कदमों से जुड़ी है, जैसे बाजार और निवेश परिस्थितियों का परीक्षण करने के बाद एक निवेश की रूपरेखा तैयार करने हेतु निवेश लक्ष्य तय करना और जोखिम की संभावनाओं का पता लगाना आदि। निवेश योजना एक या एक से अधिक ऐसी परिसंपत्तियों में धन लगाने का निर्देश देती है, जो एक निश्चित समय तक मौजूद रहने वाली होती है। हर ऐसी चीज हो आज खरीदी न जाकर भविष्य में उपयोग के लिए बनाई जाती है, एक निवेश के तौर पर स्वीकार की जाती है।

योजना प्रक्रिया :

वित्तीय प्रक्रिया के पांच चरण हैं :-

- ☐ वित्तीय आंकड़े इकट्ठा करना जैसे आपकी आय के ब्योरे, ऋण स्तर वायदे इत्यादि।
- ☐ आपके लक्ष्यों की पहचान करना।
- ☐ वित्तीय रूप से आपकी मौजूदा स्थिति और लक्षित स्थिति के बीच के वित्तीय मुद्दों अथवा दरारों की पहचान करना है।
- ☐ आपकी वित्तीय योजना तैयार करना जिसमें आपके लिए सुझाए गए निवेशों और जोखिम उठाने की आपकी प्रवृत्ति की चर्चा हो।
- ☐ वित्तीय योजना का क्रियान्वयन – योजना की समीक्षा और संशोधन – यह सुनिश्चित करना कि आर्थिक स्थिति और बदलती जीवनशैली के लिहाज से वह अद्यतन और प्रासंगिक है।



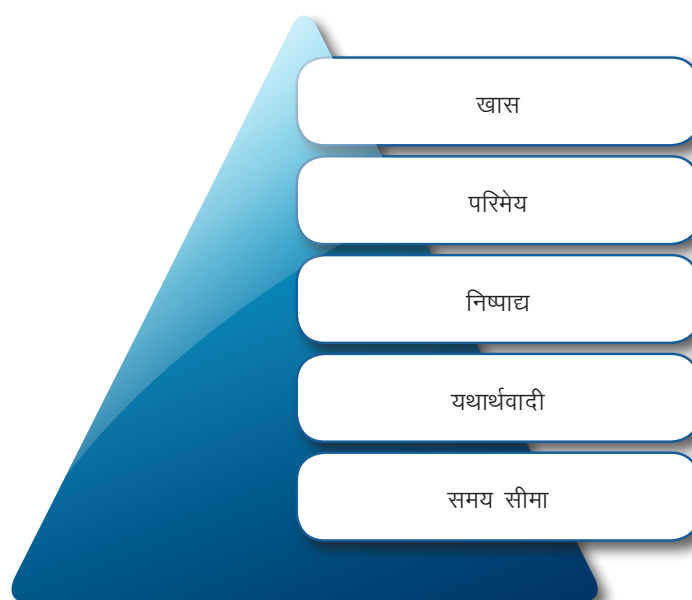
वित्तीय योजना प्रक्रिया

4 सुव्यवस्थित लक्ष्य (स्मार्ट गोल)

वित्तीय योजना आपके वित्तीय फैसलों को एक सुनिश्चित लक्ष्य तक पहुंचाने में आपकी मदद करते हैं। आपने अपने भविष्य के लिए जो योजनाएं तैयार की हैं इसके लिए आज आपको कितनी बचत करने की जरूरत है, इन बचतों से कितने लाभ की उम्मीद की जा सकती है और आप अपनी बचतों का निवेश कहां करें जिससे आपको वांछित लाभ मिल सके – यह तय करने में भी इससे मदद मिलती है।

इस तरह, आपके वित्त की योजना एक तरह का प्रबंध नहीं है, जो न केवल एक मिशन का खाका तैयार करती है, बल्कि भविष्य के लिए एक दृष्टि भी देती है। योजना प्रक्रिया में यह इसलिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे आपको यह पता चलता है कि किसी निश्चित समय सीमा में अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए किस तरह की योजना बनानी चाहिए।

वित्त के प्रबंध का एक महत्वपूर्ण कदम यह है कि आप एक सुव्यवस्थित (SMART) वित्तीय लक्ष्य तय करने में सक्षम बनें। अंग्रेजी के SMART शब्द से आप अपने लक्ष्यों को परिभाषित कर सकते हैं – **S**(*Specific* या खास) **M**(*measurable* या परिमेय), **A**(*Achievable* या निष्पाद्य), **R**(*realistic* या यथार्थवादी) और **T**(*Time-bound* या समय सीमा)। लोग आमतौर पर सामान्य लक्ष्यों को नियत करने में गलतियां कर जाते हैं, जिसके कारण उन्हें मूर्त रूप देना संभव नहीं हो पाता।



सुव्यवस्थित लक्ष्य

		गलत तरीका	सही तरीका
विशेष	आपको ठीक-ठीक यह पता होना चाहिए कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं और आपको कब यह चाहिए होगा	मैं अगले साल अपनी पोती के जन्मदिन के लिए कुछ पैसे बचाना चाहता हूँ	मैं अगले साल अपनी पोती के जन्म-दिन के लिए 10,000 रुपये बचाना चाहता हूँ।
मापा जाने योग्य (परिमेय)	हर लक्ष्य को परिमेय या गणना करने योग्य होना चाहिए ताकि आपको यह पता हो कि उसे कितने समय में हासिल किया जा सकता है	जितनी जल्दी हो सके मैं अपने क्रेडिट कार्ड का उधार चुका दूंगा।	अगले छह महीनों में मैं अपने क्रेडिट कार्ड के दो बिल पूरी तरह चुका दूंगा।
प्राप्त किया जाने योग्य	आपका लक्ष्य पहुंच के भीतर ही होना चाहिए।	मैं पैसे बचाऊंगा।	मैं हर साल 48,000 रुपये बचाऊंगा और इसके लिए हर महीने 4000 रुपये अलग रख दूंगा।
यथार्थवादी	लक्ष्य आपके संसाधनों या क्षमताओं पर आधारित होने चाहिए ताकि आप उसे आसानी से पूरा कर सकें।	नियमित बचत से मैं लखपति बन जाऊंगा।	नियमित बचत से मैं अगले साल तक कर्ज मुक्त हो जाऊंगा और अगले दिसंबर तक मेरी बचत मेरे खर्च के बराबर हो जाएगी।
समय-सीमा	लक्ष्य के लिए समय-सीमा का निर्धारण होना चाहिए ताकि अपनी तरक्की का हिसाब रख सकें और उसे हासिल करने तक आपका उत्साह बरकरार रहे।	मैं अपनी बेटी की शादी के लिए पैसे बचाऊंगा।	अपनी बेटी की शादी के लिए मैं अगले 10 साल तक प्रतिवर्ष 50,000 रुपये बचाऊंगा।

अभ्यास

(निम्नांकित अभ्यास को इस प्रकार तैयार किया गया है कि आप अपने वित्तीय मिशन और दृष्टि को भली-भांति निश्चित कर सकें।)

पहल : प्रश्नों को ध्यान से पढ़ें और ईमानदारी के साथ उत्तर दें।

आपका वर्तमान – आपकी वर्तमान वित्ति स्थिति क्या है? आप आज कहां खड़े हैं?

आपका भविष्य : भविष्य के लिए आपकी वित्तीय योजना क्या है? अगले 10 साल की योजना बताएं।

आपकी वास्तविकता : क्या आपमें अपने लक्ष्य तक पहुंचने की क्षमता है? इसके लिए आपने क्या योजना बनाई है।

भविष्य के लिए योजना बनाने में लक्ष्य एवं उद्देश्य का महत्व :

हर लक्ष्य के लिए दो अत्यंत महत्वपूर्ण पक्षों का तय करना बहेद जरूरी है – पहला जोखिम उठाने की आपकी क्षमता और दूसरा वह समय सीमा जिसके अंतर्गत आप यह लक्ष्य हासिल करना चाहते हैं। जोखिम उठाने की आपकी व्यक्तिगत क्षमता आपको यह समझ देती है कि निवेश के लिए आपको कहां सतर्क रहने की जरूरत है और तय लक्ष्यों को प्राप्त करने में कितना समय लग सकता है। किसी वित्तीय योजना की अवधि उस लक्ष्य पर निर्भर करती है, जिसे नियत किया गया है। यह तात्कालिक, माध्यमिक और दीर्घकालिक लक्ष्यों की सुरक्षा कर सकती है। तात्कालिक लक्ष्य आमतौर पर एक से तीन साल की अवधि के लिए निश्चित किए जाते हैं, जैसे विदेश भ्रमण। तीन से पांच साल के दरम्यान हासिल किए जाने वाले लक्ष्यों को माध्यमिक लक्ष्य कहा जा सकता है, जैसे कि कोई वाहन खरीदना और दीर्घकालिक लक्ष्य आमतौर पर वे माने जाते हैं, जो पांच साल या उससे अधिक समय में हासिल किए जाएं। उदाहरण स्वरूप घर खरीदना, सेवानिवृत्ति योजना आदि।

यह भी महत्वपूर्ण है कि आप अपनी सालाना आय और बचत स्तर को अच्छी तरह समझ लें। उदाहरणस्वरूप, आप एक साल में 180,000 रुपये कमाते हैं और इसका 20 फीसदी (36,000 रुपये) बचत करते हैं। आप अपने बच्चे की पढ़ाई के लिए उसे मुंबई भेजने की योजना बनाते हैं, जिसका अनुमानित बजट 200,000 रुपये है। आपका बच्चा अपनी उच्चतर माध्यमिक परीक्षा चार साल में पास करेगा। इसलिए जोखिम उठाने की अपनी क्षमता के हिसाब से आप उसकी पढ़ाई के लिए राशि प्रबंध करते हैं। अगर आपकी जोखिम उठाने की क्षमता कम है, तो अने बच्चे की पढ़ाई के लिए उसे मुंबई भेजने का आपका लक्ष्य मुश्किल हो सकता है। लेकिन यदि आप उन लोगों में से हैं, जो जोखिम उठाने से घबराते नहीं, तो आप अपने सपने को सच करके दिखा सकते हैं। एक संभव समाधान तो यही हो सकता है कि आप जोखिम वाले किंतु अधिक लाभकारी उद्यम अपने पैसों का निवेश करें। पर इसके लिए सबसे पहले जरूरी होगा कि आप जोखिम और लाभ दोनों को अच्छी तरह समझने के लिए उत्पाद का परीक्षण कर लें और तभी निवेश करें।

मान लीजिए आप पहले साल 36000 रुपये, दूसरे साल 25000 रुपये, तीसरे और चौथे साल तीस-तीस हजार रुपये निवेश करते हैं, तो चौथे साल के अंत तक आपकी कुल निवेश की गई राशि 121,000 रुपये होती है। इसका तात्पर्य यह है कि अपने बच्चे को पढ़ाई के लिए मुंबई भेजने का आपका लक्ष्य केवल तभी हासिल हो सकता है जब आप किसी ऐसी जगह अपनी राशि का निवेश करें जहां से आपको औसतन कम से कम 22 फीसदी की दर पर लाभ प्राप्त हो।

इस उत्तर तक हम किस प्रकार पहुंच सकते हैं?

भविष्य आकलन विधि का उपयोग कर हमें लाभ की वांछित दर (लक्) का अनुमान कर सकते हैं। जांच और अशुद्धि के आधार पर आप ऐसा करके देखें, जहां आदर्श स्थिति होगी – वाम पक्ष – दायां पक्ष

$$FV = \sum [PV(1+r)^n] = PV(1+r)^4 + PV(1+r)^3 + PV(1+r)^2 + PV(1+r)^1$$

यहां

FV (Future Value) = भविष्य मूल्य

PV (Present Value) = वर्तमान मूल्य

R (Rate of Return) = लाभ दर

N (Number of years) = वर्षों की संख्या

$$200,000 = 36000(1.22)^4 + 25000(1.22)^3 + 30000(1.22)^2 + 30000(1.22)^1$$

$$200,000 = 79752.044 + 45396.2 + 44652 + 36600$$

$$200,000 = 206,400.244$$

इस प्रकार 121,000 रुपये का लगभग 22 फीसदी लाभ की दर से चार वर्षों के लिए निवेश करने पर 206400.244 रुपये की राशि बनती है। वित्तीय योजना में व्यावहारिक होना काफी महत्वपूर्ण कारक है। इसलिए आप अपने आपसे यह प्रश्न कर सकते हैं कि क्या आप ऐसी कोई जोखिम उठाने की काबिलियत रखते हैं जिसके अंतर्गत आपको 22 फीसदी की दर पर लाभ प्राप्त हो सके। इसके बाद अत्यंत जोखिम वाले किसी उत्पाद में अपना पैसा लगाने के बजाय आपके लिए यह सुझाव हो सकता है कि आप किसी सुरक्षित उत्पाद का चुनाव करें या अपनी निवेश राशि बढ़ा दें या फिर जितनी जल्दी हो सके बचत करना प्रारंभ कर दें।

तालिका 1 : श्री प्रसन्ना के लिए विशेष दीर्घकालिक लक्ष्य

उम्र : 50 साल

व्यवसाय : कंपनी के अधिकारी

लक्ष्य	नाम	आज की तारीख में तय लक्ष्य	राशि (लाख रु. में)
शिक्षा—डॉक्टर	राजा (बेटा)	6 साल	20.00
शादी	रंभा (बेटी)	10 साल	35.00
घर	स्वयं	12 साल	60.00

तालिका 2 : श्री प्रसन्ना के लिए विशेष अल्पकालिक लक्ष्य

उम्र : 50 साल

व्यवसाय: कंपनी

लक्ष्य	नाम	आज की तारीख में तय लक्ष्य	राशि (रु.)
तीर्थ यात्रा	स्वयं	6 महीना	20,000
एसी खरीदने की योजना	स्वयं	2 महीना	28,000

अभ्यास

लक्ष्य	आपकी आय सालाना	सालाना बचत	समय—सीमा	लक्ष्य हासिल करने के लिए अनुमानित बजट	जेखिम की संभावना
शिक्षा					
शादी					
घर खरीदना					
कार खरीदना					
बच्चों की शिक्षा					
विश्व भ्रमण					
रिटायरमेंट					
बच्चों की शादी					

उपरोक्त आयामों को ध्यान में रखते हुए कृपया एक वित्तीय योजना निर्धारित करें ताकि यह पता चल सके कि आपको अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कितनी राशि का निवेश करना होगा और इसकी अवधि क्या होगी।

5. बचत और निवेश

बचत और निवेश के बीच सही संतुलन की तलाश :

बचत और निवेश आपस में जुड़ी हुई मगर दो स्वतंत्र प्रक्रियाएं हैं। बचत वह प्रक्रिया है जिसमें नगद राशि को किसी बैंक बचत खाते जैसे अत्यंत सुरक्षित और तरल खाते में रखा जाता है। निवेश धन (जिसे पूंजी कहते हैं) के उपयोग से एक परिसंपत्ति खरीदने की प्रक्रिया है, जिससे आप यह उम्मीद रखते हैं कि वह लंबे समय तक एक सुरक्षित और स्वीकार्य लाभ का उत्पादन करती रहेगी, हर आने वाले वर्षों में आपको धनवान बनाती रहेगी। जब आप बचत करते हैं तो आप एक लंबे समय के लिए अपने धन को सुरक्षित कर लेते हैं। निवेश के द्वारा आप इस आशा के साथ कुछ जोखिम उठाते हैं कि आने वाले समय में आपके निवेश की कीमत बढ़ने की संभावना हो जाएगी। निवेश जहां दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में आपकी मदद करती है, वही बचत आपके धन के प्रबंध का वह प्रभावशाली तरीका है जिसके आपको तात्कालिक जरूरतें पूरी होती हैं और यह किसी आकस्मिक व्यय के लिए आपको सुरक्षा देती है। धन की बचत के वक्त ज्यादा जोर मूलधन के ठहराव पर हुआ करता है न कि लाभ की संभाव्यता पर। जबकि निवेश का अर्थ है कुछ जोखिम उठाना और अपने धन को किसी ऐसे माध्यम में लगाना जहां से उच्चतम लाभ की गुंजाइश हो।

6. निवेश के विरुद्ध ऋण

लोगों के अंदर एक सामान्य भ्रांति है कि वे अपने वित्तीय लक्ष्य को हासिल करने के लिए या तो कोई ऋण ले लेंगे या कोई निवेश कर लेंगे। (जैसे कि घर खरीदने में)। ऐसा कोई नियम नहीं है जिसमें यह कहा गया हो कि यही विकल्प उचित हो सकते हैं, क्योंकि यह प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता और ऋण अथवा निवेश की प्रकृति पर निर्भर करता है। निम्नलिखित बिंदु गौरतलब हैं।

- ☐ यह विशुद्ध रूप से आपके वित्तीय सामर्थ्य और अन्य कारकों पर निर्भर करता है।
- ☐ क्रेडिट कार्ड ऋण और निजी ऋण काफी महंगे हुआ करते हैं।
- ☐ यदि आप कम ब्याज दर और लाभों वाला कोई ऋण लेते हैं जैसे कि घर के लिए ऋण तो यह ऋण लेना आपके लिए फायदेमंद हो सकता है। यदि आपके पास कोई निवेश योजना है, जिससे आप अच्छा लाभ प्राप्त करा सकते हैं, तो आपको निवेश ही अपनाना चाहिए।
- ☐ आपको यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि निवेश जोखिम भरा नहीं है और यदि आप धन गवां देते हैं तो इससे आपके परिवार पर कोई असर नहीं पड़ेगा। उदाहरण के लिए यदि आप शेयर बाजार में कोई बड़ा निवेश करते हैं और इसके लिए कहीं से उधार लेते हैं तो यह काफी जोखिम भरा हो सकता है।

7 व्यक्तिगत बजट का गणक

आपका एक बजट है। तय करें कि हर महीने आप वास्तव में कितना खर्च करते हैं। कुछ खर्च नियत हुआ करते हैं, जैसे किराया, ऋण अदायगी, आदि जिन्हें हम प्रत्येक महीने थोड़ा-थोड़ा चुकाते हैं। कुछ अनियमित खर्च होते हैं जो हमारी जेबें खाली कर जाते हैं। जैसे—भोजन, कपड़े और मनोरंजन आदि। इन अनियमित खर्चों को नियंत्रित करने के लिए आपको सूझबूझ का इस्तेमाल करना होगा, तभी आप बचत की शुरुआत कर सकेंगे।

एक व्यक्तिगत बजट तैयार करना आसान है।

आय — अपनी मासिक आय, तनखाह और निवेश आय को जोड़ दें।

खर्च — मासिक खर्चों जैसे कि किराया, ऋण अदायगी, भोजन का औसत खर्च, स्वास्थ्य व्ययों, मनोरंजन व्ययों आदि को जोड़ लें। उन खर्चों का औसत निकाल लें जो हर महीने करने ही होते हैं जैसे कपड़े और उन खर्चों का भी जो कभी-कभार करने पड़ते हैं, जैसे कार बीमा। यह जानना आपके लिए आवश्यक होगा कि आप एक या दो महीने में कितनी रकम खर्च करते हैं। यह जान कर हममें से अधिकांश लोग अचंभे में पड़ जाया करते हैं कि प्रत्येक महीने कहां-कहां और कितने अधिक रुपये 'गायब' हो जाते हैं।

आय में से खर्च को घटा दें — अपनी आमदनी के अनुपात में आप कितना अधिक खर्च करते हैं यह एक असामान्य समस्या नहीं है; आपके लिए तीन विकल्प हो सकते हैं खर्चों में कटौती करें, आमदनी बढ़ाएं या फिर दोनों उपाय अपनाएं खर्चों में कटौती करें— खर्च कम करने के कई रास्ते हो सकते हैं। गुणवत्ता से समझौता किए बिना ही कम कीमत वाली वस्तुओं के उपभोग और खरीद में कटौती करें। वास्तविक खर्च और बजट में दर्शाए गए खर्च के बीच हर महीने कितना अंतर रहता है, यह जानने की कोशिश करें।

आमदनी बढ़ाएं — अपनी कार्यक्षमता या शिक्षा में वृद्धि करें ताकि आप एक अधिक तनखाह वाली नौकरी पा सकें अथवा अपने किसी अन्य शौक के माध्यम से कमाएं। बचत के लिए किसी नियम को लागू करना तो मुश्किल ही है क्योंकि यह उम्र और आय के स्तर पर निर्भर करता है। तब भी 10 प्रतिशत एक अच्छी शुरुआत हो सकती है। अगर आप महसूस करते हैं कि यह आपके लिए अधिक मुश्किल हो रहा है तो इसे छोड़ सकते हैं। आप हर महीने थोड़ी-थोड़ी बचत शुरू कर सकते हैं और धीरे-धीरे इसे बढ़ा सकते हैं।

अभ्यास

सभी स्रोतों से प्राप्त होने वाली आय और उन स्रोतों का उल्लेख करते हुए एक मासिक बजट बनाने की कोशिश करें। इसके बाद आप उस महीने होने वाले सभी संभावित खर्चों को उसमें से घटा दें। यह आवश्यक है कि आप महीने की शुरुआत में ही यह अभ्यास पूरा कर लें ताकि आप यह तय कर सकें कि निवेश का उपयुक्त स्तर क्या हो सकता है। नियम यह कहता है कि आपकी आमदनी का 20 फीसदी बचत करना चाहिए। अपनी वस्तुस्थिति का आकलन करने के लिए इस अभ्यास को पूरा करें।

आपका मासिक बजट	
(अ) आय	
वेतन	
किराया	
ब्याज प्रति महीना	
पूंजीगत लाभ	
व्यापार	
कुल आमदनी	
(ब) खर्च	
भ्रमण एवं परिवहन	
भोजन और अन्य उपभोक्ता वस्तुएं	
किराया	
अवकाश	
बीमा किश्त	
बच्चों की शिक्षा	
छुट्टियां	
अन्य	
कुल खर्च	
(स) बचत : आय-खर्च	

यह पता लगाने के लिए कि आप अपनी आमदनी का 2 फीसदी बचत कर रहे हैं या नहीं, आप अपनी बचत को 100 से गुणा करें और अपनी पूरी आमदनी से इसमें भाग दें। यदि मान 20 से कम उभरता है, तो इसका तात्पर्य यह है कि आप अपने धन को असावधानीपूर्वक खर्च कर रहे हैं और आपको तुरंत बचत शुरू कर देनी चाहिए.... बिना देरी किए।

विशेष मासिक बजट

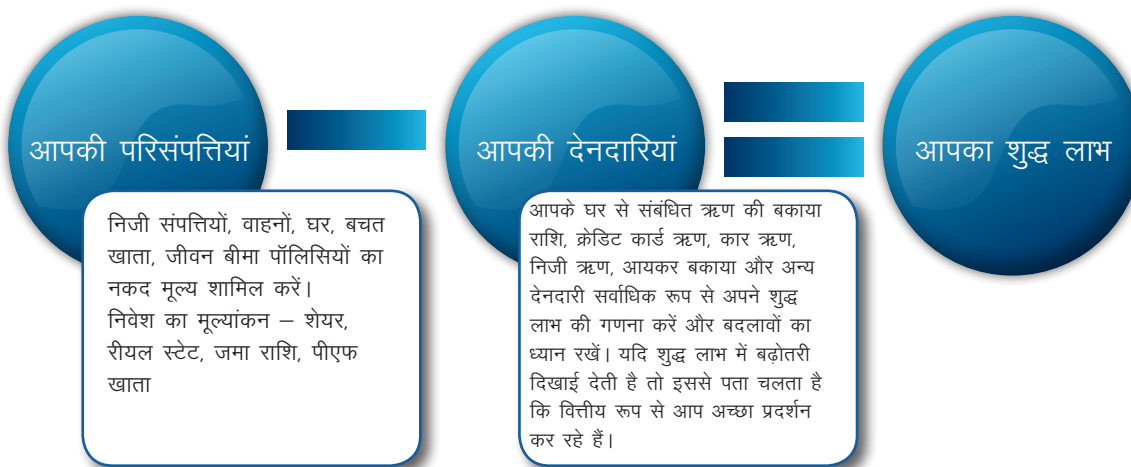
जनवरी

नाम : कृष्णन , उम्र – 59, कंपनी के अधिकारी

आय	राशि (रुपये)	खर्च	राशि (रुपये)
तनखाहा	75,500	वचनबद्ध (ईएमआई)	32,500
निवेश आय	6,000	जीवन खर्च	28,700
पेंशन	81,500	अन्य खर्च	
अन्य		पी.एफ./एल.आई.सी.	10,500
आय		कुल खर्च	71,700

8.व्यक्तिगत शुद्ध लाभ का गणक

आपका शुद्ध लाभ मूलतः आपकी निजी संपत्ति के कुल मूल्य और आपकी देनदारी (जिम्मेदारियों) के बीच का अंतर है। यह आपके वित्तीय स्वास्थ्य का एक सूचक है। अपने वित्त की योजना बनाने के लिए पहला कदम यह जानना है कि वित्तीय रूप से आज आप कहां खड़े हैं। इसी से आपके शुद्ध लाभ का पता चलता है।



शुद्ध लाभ की गणना करते वक्त निम्नलिखित बिंदुओं का ध्यान रखें :-

1. वर्तमान बाजार भाव/वस्तुगत भाव का उपयोग करें।
2. यदि आप सटीक गणना नहीं कर पा रहे तो अनुमान से काम चलाएं।
3. संतुलित दृष्टिकोण अपनाएं।
4. गैर-जरूरी व्ययों का निषेध करें।

नमूना शुद्ध लाभ विवरण

नाम — राजा उम्र — 58
एक कंपनी में कार्यरत 31 जनवरी को शुद्ध लाभ

परिसंपत्तियां	रुपये (लाख में)	देनदारियां	रुपये (लाख में)
घर	56.00	घर के लिए ऋण	17.50
बचत खाते	00.32	कार ऋण	05.20
इक्विटी	03.50	क्रेडिट कार्ड	02.40
फिक्सड डिपॉजिट	05.00	निजी ऋण	06.10
कार	06.20	कुल	31.20
एनएससी	04.30		
कुल	75.32	शुद्ध लाभ	44.12

9. आय बनाम जोखिम

जोखिम और निवेश दोनों साथ ही चलते हैं। जोखिम को हम उस मौके के तौर पर समझ सकते हैं, जिसमें कोई व्यक्ति अपने धन को यह जानते हुए निवेश करता है कि उसे आंशिक रूप से या पूरा का पूरा भी गंवा सकता है। यहां अच्छी बात यह है कि निवेश की जोखिम के साथ हमेशा निवेश की संभावना भी बनी रहती है — और यही चीज इस पूरी प्रक्रिया को लाभप्रद बनाती है।

जोखिम के संबंध में याद रखने लायक बुनियादी बात यह है कि यह उतनी ही बढ़ती है, जितनी लाभ की संभाव्यता जोखिम उतनी ही बड़ी होगी। (यहां 'संभाव्यता' शब्द को नहीं भूलना चाहिए, इसमें गारंटी नहीं है।)

इसी प्रकार 'जोखिम से रहित' किस्म के उत्पाद जैसे कि बचत खाते और सरकारी बांड के साथ भी स्फीति की दर से कम आय की जोखिम हुई होती है। लाभ यदि स्फीति की दर से कम होती है, तो वास्तव में यह निवेश मानवरहित ही माना जाएगा, क्योंकि आपकी आय उस मात्रा में नहीं बढ़ती, जितनी वह किसी अन्य निवेश माध्यम के साथ बढ़ सकती थी।

आप जब भी निवेश करते हैं तो यह महत्वपूर्ण है कि आप उन पर जरूरी उपायों पर भी ध्यान दें, जिनसे जोखिम को नियंत्रित किया जा सके। जब आप किसी परिसंपत्ति वर्ग में निवेश करें तो आप अपने निवेश पर निगरानी बनाए रखें और बाजार के उतार-चढ़ाव के अनुसार खुद को अद्यतन रखने की कोशिश करें। ताकि किसी फंदे में न फंस जाएं। जब भी नियत लाभ में असामान्य बढ़ोत्तरी दिखाई दे तो जोखिम की संभाव्यता अवश्य जांच लें।

यहां आपके निवेश जीवन के विभिन्न चरणों के लिए परिसंपत्ति विनियोजन का नमूना दिया जा रहा है। यह निवेश की आक्रामक शैली से लेकर संतुलित शैली तक क्रमिक गतिविधि को दर्शाता है।

परिसंपत्ति मिश्रण

सेवानिवृत्ति के वर्ष	स्टॉक	बांड	नकद
20	80%	10%	10%
15	60%	30%	10%
10	40%	50%	10%
5	30%	60%	10%

ध्यान दें कि इस तरह के नमूने किसी खास स्तर के लाभ की जांच करने के लिए नहीं बनाए गए हैं। जहां परिसंपत्तियों का विनियोजन जोखिम को संतुलित रखने में आपकी मदद करता है, वहीं यह संचयन की संभाव्यता को उतना नहीं बढ़ाता जितना कि आप चाहते हैं। यह भी याद रखें कि परिसंपत्ति का विनियोजन अपरिवर्तनीय नहीं होता— समय के साथ जब आप सेवा-निवृत्ति के निकट पहुंचते हैं तो आपको अपनी संचित संपत्ति को अधिक संतुलित विकल्पों की तरफ मोड़ने की आवश्यकता पड़ती है ताकि आप बाजार में आने वाले तात्कालिक उतार-चढ़ावों के प्रभाव से बच सकें। उचित यह होगा कि आप निवेश से पहले ही उत्पाद को भली-भांति समझ लें।

10. चक्रवृद्ध (कंपाउंडिंग)

किसी भी अन्य कारक की अपेक्षा समय ही आपके निवेश को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है।

चक्रवृद्धि की ताकत शक्ति का उपयोग कर धन की छोटी मात्रा को भी समय के साथ एक बड़ी राशि में बदला जा सकता है। चक्रवृद्धि किसी भी निवेशकर्ता का एक अच्छा मित्र होता है। समय के साथ निवेश का मूल्य बढ़ सकता है और दीर्घकाल में वह मूल्य अधिकतर स्तर तक भी पहुंच सकता है। यह उस लाभ के माध्यम से अर्जित किया जाता है, जो खर्च नहीं किया जाता। जब आप लाभ का निवेश करते हैं तो आप उससे भी लाभ कमाते हैं, और लाभ के प्रत्येक निवेश से यह लाभ उत्तरोत्तर बढ़ता ही जाता है। इसलिए महत्वपूर्ण यह है कि आप बचत की शुरुआत जल्दी कर लें ताकि आपको चक्रवृद्धि ब्याज दरों की ताकत का फायदा मिले।

पैसों की कीमत एक निश्चित समय के साथ लाभ देता है। उदाहरण के लिए, जब एक साल के लिए 5 फीसदी ब्याज पर आप आज 100 रुपये निवेश करते हैं तो वह 105 रुपये हो जाता है। यहां किसी निवेशकर्ता के लिए एक साल में 100 रुपये की जगह 105 रुपये चुकाने से कोई खास अंतर नहीं पड़ता।

भविष्य में आय के प्रवाह का मूल्य – खास कर उस स्थिति में जब वार्षिक आय में कटौती हो जाती है और बाद में उसे जोड़ दिया जाता है – आय के समूचे प्रवाह पर भविष्य में एकमुश्त 'वर्तमान मूल्य' प्रदान करता है। भविष्य निधि के वर्तमान मूल्य को हम **PV** मान लेते हैं। इस प्रकार उदाहरण के लिए, एक साल में **FV** की जितनी मात्रा प्राप्त की जाती है, उसमें ब्याज की किसी दरपर कटौती की जाती है ताकि वर्तमान में **PV** की एक मात्रा दी जा सके।

$$PV = FV / (1+r)$$

भविष्य में धन के प्रवाह में कटौती दर के अनुसार कटौती होती है, कटौती दर जितनी अधिकतम होगी, भविष्य में धन के प्रवाह का वर्तमान मूल्य भी उतना ही कम होगा। निवेश के मामले में धन के समय मान के महत्व को और धन के मूल्य को बनाए रखना बहुत जरूरी होता है। इसलिए आपको अपने धन के मूल्य की सुरक्षा करते हुए ही निवेश करना चाहिए।

अभ्यास :

अपने उपयोग की विभिन्न वस्तुओं की सूची बनाएं और उनके आज के मूल्य के साथ ही 10 साल पहले के उनके मूल्य को भी दर्ज करें। इन दोनों ही मूल्यों के बीच अंतर निकालें और देखें कि समय के साथ धन की कीमत में कैसे बदलाव आता है।

तालिका : पैसों की कीमत				
	परिसंपत्तियां	10 साल पहले का मूल्य (-10)	आज का मूल्य (0)	10 साल बाद का मूल्य (+10)
1	संपत्ति / घर			
2	सोना (10 ग्राम)			
3	निवेश ☐ सेंसेक्स / निफ्टी ☐ बांड ☐ फिक्स डिपॉजिट ब्याज दर			
4	चावल			
5	कॉलेज शिक्षा			
6				
7				

चक्रवृद्धि की ताकत

अब हम दो दोस्तों, रमन और प्रसाद के बीच तुलना करते हैं। रमन 19 वर्ष की उम्र से प्रतिवर्ष 2000 रुपये बचत करना शुरू करता है। आठ वर्ष बाद वह धन का निवेश करना बंद कर देता है। दूसरी तरफ प्रसाद 2000 रुपये प्रतिवर्ष बचत करना तब शुरू करता है जब वह 27 वर्ष का होता है और वह तब तक निरंतर इस राशि का निवेश जारी रखता है जब तक 65 वर्ष का नहीं हो जाता। रमन ने 16000 रुपये का निवेश किया और प्रसाद ने 74,000 रुपये का।

यदि दोनों अपनी बचतों पर प्रति वर्ष 10 फीसदी कर पूर्व लाभ अर्जित करते हैं, तो 65 वर्ष की उम्र में सेवा-निवृत्त होने पर उनमें से किसके पास अधिक धन होगा?

रमन के पास। 19 से 27 वर्ष की उम्र तक 2000 रुपये की उसकी वार्षिक बचत 65 वर्ष की उम्र में बढ़कर 1,035,160 रुपये हो जाएगी, जबकि 27 वर्ष से 65 वर्ष की उम्र के बीच प्रसाद की 2000 रुपये की वार्षिक बचत बढ़कर 8,00,496 रुपये होगी। रमन के निवेश में 64 गुणा बढ़ोतरी होती है जबकि प्रसाद के निवेश में मात्र 10 गुणा।

सार : नियोजन की शक्ति वह एकमात्र सबसे महत्वपूर्ण कारण है जो आपको तत्काल ही निवेश प्रारंभ करने का संकेत देती है। याद रखें कि वह प्रत्येक दिन जब आप अपने धन का निवेश करते हैं, एक ऐसा दिन बन जाता है जब आपका धन आपके लिए काम देने लगता है।

अब हम यह देखें कि हमारा धन किस अनुपात में बढ़ता है। जब हम एक एकमुश्त राशि का निवेश करते हैं और उसे अक्षुण्ण रखते हैं। ब्याज की दर को हम 10 फीसदी रख कर देखते हैं।

भुगतान की अनुमानित राशि (रुपये में)					
वर्ष	100,000	200,000	300,000	400,000	500,000
5	161,051	322,102	483,153	644,204	805,255
10	259,374	518,748	778,123	1,037,497	1,296,871
15	417,725	835,450	1,253,174	1,670,899	2,088,624
20	672,750	1,345,500	2,018,250	2,691,000	3,363,750
25	1,083,471	2,166,941	3,250,412	4,333,882	5,417,353
30	1,744,940	3,489,880	5,234,821	6,979,761	8,724,701

तालिका देखना : यदि आप 30 वर्ष की अवधि के लिए धन का निवेश करने की योजना बनाते हैं और 1 साल की निधि नियोजित करते हैं तो आपको 17,44,940 रुपये की राशि प्राप्त होती है।

अभ्यास :

यदि राम, जिसकी उम्र 60 साल है, 20 वर्ष बाद अपने बेटे को 20 लाख रुपये का नकद उपहार देना चाहते हैं, तो उसे कितना निवेश करना होगा? ऊपर की तालिका का उपयोग करें।

11. निवेश पर महंगाई का प्रभाव

यदि आपके निवेश का अधिकांश निश्चित आय वाले ऋण पत्रों के रूप में है, तो आपको महंगाई दरों का खास ध्यान रखने की जरूरत है।

महंगाई दरों का बढ़ना सेवानिवृत्त होने वाले लोगों के लिए अधिक प्रभावकारी हुआ करता है, जिनके पास एक निश्चित आमदनी होती है। ऐसा इसलिए क्योंकि जब महंगाई के कारण धन की क्रय शक्ति में गिरावट आती है तो सेवा निवृत्ति होने वाले पहले व्यक्ति की तुलना में अपने धन से कम खरीदारी कर पाने में सक्षम हो पाते हैं।

महंगाई आपकी क्रय शक्ति को निगल जाया करती है। उदाहरण के लिए यदि महंगाई की औसत दर 8 फीसदी है, तो आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि आपका निवेश कम से कम 8 फीसदी या इससे अधिक ही अर्जित करें, वह भी कर चुकाने के बाद। अब हम 1,00,000 रुपये के निवेश की एक रूपरेखा की कल्पना करते हैं, जहां अर्जित लाभ की दर 10 फीसदी है और महंगाई की दर 8 फीसदी। इस मामले में प्रतिवर्ष लाभ की राशि 10,000 रुपये होती है, जो आयकर चुकाने के बाद (यदि आप 30 फीसदी की दर से अधिकतम कर चुकाते हैं) 7,000 रुपये होती है। अब यदि आप 8 फीसदी महंगाई को लागू करके देखें (8000 अथवा 1,00,000 का 8 फीसदी) इसका अर्थ यह निकलता है कि वास्तव में आपने कुछ भी धन अर्जित नहीं किया है।

12. रिटायरमेंट (सेवानिवृत्ति) योजना

सेवानिवृत्ति जीवन का एक अत्यंत निराला और नाटकीय चरण है। अतः सेवानिवृत्ति की तरफ संक्रमण के लिए शायद ही कोई योजना या विचार हुआ करता है। जबकि इसकी अपेक्षा होती है। हर किसी की यह कामना होती है कि उसका सेवानिवृत्ति काल आरामदायक रहे। लेकिन किसी सुनिश्चित योजना के बगैर ऐसा होने की संभावना कम रहती है। लोग सेवा-निवृत्ति के बाद भी लंबा जीवन जीते हैं, जो एक अच्छी बात है, पर सेवानिवृत्ति के बाद जीवन के साधन काफी खर्चीले हो जाते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि आगे के बारे में सोच कर चलें और जैसे ही आप सेवानिवृत्ति की उम्र तक पहुंचें वित्तीय रूप से अपने आपको तैयार कर लें।

सेवानिवृत्ति योजना का अर्थ है अपनी वृद्धावस्था के लिए आय के एक स्रोत के तौर पर धन या संपत्ति को सुरक्षित रखना। ऐसा सेवानिवृत्ति की उम्र तक पहुंचने से पहले ही कर लेना चाहिए।

याद रखें कि आपका लक्ष्य ऐसे निर्णय लेना है जो भविष्य में आपके वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में आपकी मदद कर सकें। ये निर्णय आपकी वर्तमान व्यक्तिगत वित्तीय स्थिति पर आधारित होते हैं।

1) जल्दी शुरुआत करें और शांतिपूर्वक सेवानिवृत्त हों — उदाहरण के लिए, यदि आप 25 वर्ष की उम्र से सेवा-निवृत्ति के लिए बचत प्रारंभ करते हैं, और 60 वर्ष की उम्र में आपको सेवानिवृत्त होना है तो आपके पास 35 वर्षों का एक निवेश क्षितिज खुल जाता है।

25 वर्ष की उम्र में यदि आप 6 फीसदी की मिश्र दर से प्रति महीने 1,000 रुपये निवेश करना शुरू करते हैं तो संपूर्ण राशि 13,80,290 रुपये हो जाती है। वैकल्पिक तौर पर यदि इसी निवेश को आप 35 वर्ष की उम्र में शुरू करते हैं तो 60 वर्ष की उम्र में इसकी परिपक्वता राशि 6,79,580 रुपये होती है।

2) बुद्धिमतापूर्ण योजना : सेवानिवृत्ति के पश्चात् स्वास्थ्य खर्चों और आकस्मिक जरूरतों के लिए कुछ धन अलग कर लें। कुछ अत्यंत अनिवार्य लक्ष्यों जैसे कि बच्चों की शिक्षा और शादी के लिए अपने स्रोतों का विनियोजन करें ताकि आगे चलकर आप किसी परेशानी से बच सकें।

3) योजना पर नजर रखना और उसकी समीक्षा करना : समय-समय पर वित्तीय योजना की समीक्षा करना बहुत आवश्यक है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हम लक्ष्यों की दिशा में ही जा रहे हैं अथवा नहीं। साथ ही निवेश संबंधित जोखिमों, खर्चों एवं उसकी तरलता को समझने और उससे तालमेल बनाने की भी जरूरत होती है।

4) अपनी सेवा-निवृत्ति बचत में डुबकी न लगाएं : – सेवानिवृत्ति से पहले बचत के इस मद के साथ छेड़छाड़ बिल्कुल भी न करें। यदि आप इस सेवा निवृत्ति मद की राशि का कोई हिस्सा अपनी रोजमर्रा की जरूरतों के लिए खर्च करेंगे तो दीर्घकाल में यह आपके लिए एक बड़ी हानि का कारक बनेगा। इससे सेवानिवृत्ति के लिए आपका संचयन बहुत कम हो सकता है।

ऐसे पांच तरीकों की सूची तैयार करें जिसके माध्यम से 30 वर्ष पूर्व सेवानिवृत्ति योजना बनाई जा सके।

- 1.
- 2.
- 3.
- 4.
- 5.

अपनी सेवानिवृत्ति निधि के निर्माण के लिए आप कितना निवेश कर सकते हैं?

- 1.
- 2.
- 3.
- 4.
- 5.

अपनी सेवानिवृत्ति निधि के निर्माण के लिए आप कितना निवेश कर सकते हैं?

मान लेते हैं, 30 वर्ष की उम्र में राम 60 वर्ष की उम्र में अपनी सेवा निवृत्ति की इच्छा रखता है। (उसकी संभावित आयु 75 वर्ष है) यदि उसका मासिक खर्च 10,000 रुपये है तो सेवा निवृत्ति के लिए उसे कितने संचयन की जरूरत पड़ेगी जिससे उसे वर्तमान खर्च का कम से कम 80 फीसदी प्राप्त हो सके? इस संचयन के लिए उसे प्रत्येक महीने कितनी राशि की बचत करनी पड़ेगी?

संचयन तथा मासिक निवेश के निर्धारण के लिए सबसे पहले हमें यह पता लगाना होगा कि अपनी सेवा-निवृत्ति की उम्र तक प्रत्येक महीने उसे कितना खर्च करना पड़ेगा, क्योंकि वर्तमान खर्च की उसकी राशि का मूल्य भविष्य में स्फीति के कारण अवश्य ही कम हो जाएगा।

पहला कदम : 5 फीसदी महंगाई दर को ध्यान में रखकर उसके सेवानिवृत्ति काल के खर्चों का अनुमान लगाएं।

वर्ष –संख्या, जिसके बाद आप सेवानिवृत्त होंगे	5	10	15	20	25	30
सेवानिवृत्ति के समय खर्च के लिए हर महीने कितनी राशि चाहिए	(12,762.82)	(16,288.95)	(20,789.28)	(26,532.98)	(33,863.55)	(43,219.42)
सेवानिवृत्ति के समय खर्च करने के लिए हर महीने आपको कितनी राशि चाहिए (जरूरत का 80 फीसदी)	(10,210.82)	(13,031.16)	(16,631.43)	(21,226.38)	(27,090.84)	(34,575.54)

टिप्पणी : महंगाई के कारण 30 वर्ष बाद वर्तमान खर्चों में वृद्धि

सेवा-निवृत्ति के समय खर्च कम क्यों होंगे? (उपरोक्त हालात में 80 फीसदी)

- 1.
- 2.
- 3.

उत्तर : राम आज से 30 वर्ष बाद सेवा निवृत्त होगा, इसलिए उसका मासिक खर्च 43,219 रुपये होगा और 80 फीसदी के साथ यह राशि 34,575 रुपये होगी।

दूसरा कदम – सेवानिवृत्ति के समय उसे कितना संचयन की जरूरत पड़ेगी, ताकि उसकी मासिक खर्च की जरूरत के हिसाब से नगद का निरंतर प्रवाह बना रहे?

पूर्वानुमान : संचयन अथवा निवेश पर लाभ की दर 7 फीसदी रहेगी।

रिटायरमेंट में बचे वर्षों की संख्या	10,210.25 रुपये के खर्च के लिए	13,031.16 रुपये के खर्च के लिए	16,631.43 रुपये के खर्च के लिए	21,226.38 रुपये के खर्च के लिए	27,090.84 रुपये के खर्च के लिए	34,575.54 रुपये के खर्च के लिए
5	585,130.95	746,791.84	953,116.66	1,216,445.22	1,552,526.61	1,981,461.08
10	1,117,707.64	1,426,509.65	1,820,627.96	2,323,633.90	2,965,611.10	3,784,954.77
15	1,602,450.28	2,045,177.75	2,610,222.66	3,331,379.05	4,251,777.66	5,426,465.43
20	2,043,655.17	2,608,279.41	3,328,898.92	4,428,612.31	5,422,425.66	6,920,541.77
25	2,445,232.68	3,120,805.39	3,983,026.38	5,083,463.13	6,487,930.27	8,280,425.78
30	2,810,742.02	3,587,298.21	4,578,402.57	5,843,330.78	7,457,735.34	9,518,170.11

राम 60 वर्ष की उम्र में सेवानिवृत्त होगा और यदि उसका जीवन काल 75 वर्ष है तो 15 वर्षों के लिए उसे खर्च की जरूरत पड़ेगी। (75 वर्ष – 60 वर्ष)

उपरोक्त तालिका से हम यह जान सकते हैं कि 15 वर्षों के लिए उसका वांछित संचयन 54,26,465 रुपये होना चाहिए।

तीसरा कदम — राम एक ऐसी व्यवस्थित निवेश योजना (SIP) बनाना चाहता है, जिसमें उसे प्रत्येक महीने के निवेश पर 10 फीसदी वार्षिक बढ़त प्राप्त हो और 30 वर्ष में उसकी सेवा-निवृत्ति निधि तैयार हो जाए। इस निधि के लिए प्रत्येक महीने राम को कितने निवेश की जरूरत पड़ेगी?

गणना : गणना के उद्देश्य से हमें 10 लाख रुपये की निधि का पता लगाना होगा और जब यह निधि मिल जाएगी तो हम इसे वांछित राशि से गुणा कर देंगे।

ब्याज ६ वर्षों की संख्या	10 लाख रुपये का कोष तैयार करने के लिए हर महीने निवेश की जरूरी राशि					
	5	10	15	20	25	30
6%	(14,321.72)	(6,125.04)	(3,468.51)	(2,194.69)	(1,471.50)	(1,021.18)
8%	(13,621.38)	(5,516.23)	(2,943.09)	(1,746.24)	(1,093.09)	(705.41)
10%	(12,958.11)	(4,963.82)	(2,489.91)	(1,381.24)	(804.40)	(480.93)
12%	(12,329.91)	(4,463.57)	(2,101.14)	(1,087.13)	(587.47)	(324.57)
15%	(11,449.24)	(3,802.02)	(1,622.41)	(753.54)	(362.77)	(177.56)

उपरोक्त तालिका की सहायता से हम यह जान लेते हैं कि 10 लाख रुपये की निधि के लिए उसे प्रत्येक महीने 480 रुपये निवेश करने होंगे। इसी प्रकार 54 लाख रुपये के लिए उसे 2,592 रुपये निवेश करने होंगे। $(54 / 10)$ गुणा 480 = 2,592 रुपये

अभ्यास :

आप अपनी वांछित सेवा-निवृत्ति निधि तथा इस निधि के निर्माण के लिए अपेक्षित मासिक निवेश की राशि की निम्नलिखित तालिका के आधार पर गणना करें:

1. आपका मासिक खर्च ()

आकलन के उद्देश्य से मासिक खर्च की राशि 10,000 रुपये मान लेते हैं। यदि आपका खर्च 20,000 रुपये है तो निधि को दोगुना कर लें।

2. पांच प्रतिशत महंगाई दर से सेवानिवृत्ति के समय आपका वांछित मासिक खर्च

आप कितने साल बाद सेवानिवृत्त होंगे	5	10	15	20	25	30
सेवानिवृत्ति के समय आपको हर महीने कितने पैसों की जरूरत होगी	(12,762.82)	(16,288.95)	(20,789.28)	(26,532.98)	(33,863.55)	(43,219.42)
सेवानिवृत्ति के समय आपको हर महीने कितने पैसों की जरूरत होगी (जरूरत का 80 फीसदी)	(10,210.82)	(13,031.16)	(16,631.43)	(21,226.38)	(27,090.84)	(34,575.54)

2- नकद के निरंतर प्रवाह के लिए अनिवार्य सेवानिवृत्ति निधि _____

सेवानिवृत्त में वर्षों की संख्या	खर्च के लिए 10,210.25 रुपये	खर्च के लिए 13,031.16 रुपये	खर्च के लिए 16,631.43 रुपये	खर्च के लिए 21,226.38 रुपये	खर्च के लिए 27,090.84 रुपये	खर्च के लिए 34,575.54 रुपये
5	585,130.95	746,791.84	953,116.66	1,216,445.22	1,552,526.61	1,981,461.08
10	1,117,707.64	1,426,509.65	1,820,627.96	2,323,633.90	2,965,611.10	3,784,954.77
15	1,602,450.28	2,045,177.75	2,610,222.66	3,331,379.05	4,251,777.66	5,426,465.43
20	2,043,655.17	2,608,279.41	3,328,898.92	4,428,612.31	5,422,425.66	6,920,541.77
25	2,445,232.68	3,120,805.39	3,983,026.38	5,083,463.13	6,487,930.27	8,280,425.78
30	2,810,742.02	3,587,298.21	4,578,402.57	5,843,330.78	7,457,735.34	9,518,170.11

4. आपकी निधि के निर्माण के लिए वांछित मासिक निवेश

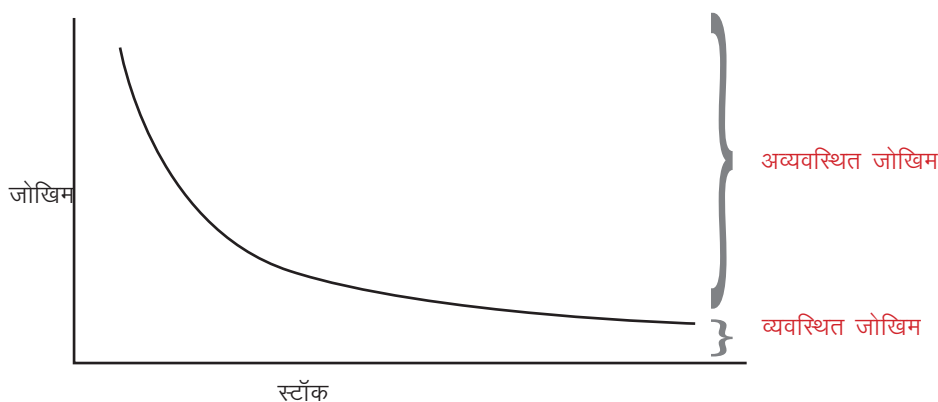
पूर्वानुमान : आप ब्याज की दर अपनी जोखिम उठाने की क्षमता के अनुसार रख सकते हैं। आकलन के लिए मान लेते हैं कि 10 लाख रुपये की निधि के निर्माण के लिए आपको नियमित निवेश करना है। यदि आपकी आवश्यकता 20 लाख रुपये की है, तो मासिक निवेश राशि को दोगुना कर लें।

ब्याज / वर्षों की संख्या	10 लाख रुपये का कोष तैयार करने के लिए हर महीने निवेश जरूरी					
	5	10	15	20	25	30
6%	(14,321.72)	(6,125.04)	(3,468.51)	(2,194.69)	(1,471.50)	(1,021.18)
8%	(13,621.38)	(5,516.23)	(2,943.09)	(1,746.24)	(1,093.09)	(705.41)
10%	(12,958.11)	(4,963.82)	(2,489.91)	(1,381.24)	(804.40)	(480.93)
12%	(12,329.91)	(4,463.57)	(2,101.14)	(1,087.13)	(587.47)	(324.57)
15%	(11,449.24)	(3,802.02)	(1,622.41)	(753.54)	(362.77)	(177.56)

13. निवेश के निर्देश

आपके मार्गदर्शन के लिए कुछ निर्देश इस प्रकार हैं :

- ☐ निवेश से पूर्व स्पष्ट और समुचित निवेश लक्ष्य निर्धारित कर लें।
- ☐ याद रखें कि किसी भी निवेश के साथ जोखिम जुड़ा रहता है। यदि लाभ की संभाव्यता बढ़ानी हो तो जोखिम उठाने में संकोच न करें।
- ☐ अपनी कुल जोखिम को कम करने के लिए निवेश पोर्टफोलियो में विविधता लाएं।
- ☐ ऋण, इक्विटी और नकद की तुल्यता वाले उचित ऋण का चुनाव करें।
- ☐ अपनी जानकारी के स्तर को स्वीकार करें। ऐसे निवेशों से बचें जिनके बारे में आप नहीं जानते।
- ☐ पूरी तैयारी करें और यह सुनिश्चित कर लें कि आप कहाँ निवेश कर रहे हैं और जोखिम, लाभ और आपके पोर्टफोलिया की बाजार में संभावना है।
- ☐ निवेश का फैसला लेते वक्त यह बात दिमाग में रखें कि आपके निवेश पर आपको आयकर भी चुकाना होगा।
- ☐ कभी भी सलाह एवं अफवाहों के आधार पर निवेश न करें। वे कभी-कभार ही सही साबित होते हैं।
- ☐ ऐसी निवेश सलाहों, जो आपकी समझ से परे हो पर आंखें बंद कर भरोसा न करें।
- ☐ यदि आप इस बात से सहमति नहीं रखते कि कोई निवेश आपके लिए उचित है, तो अपने वित्तीय सलाहकार के सुझावों को न कहने में बिल्कुल संकोच न करें।
- ☐ ऐसी जोखिम न उठाएं जिसे आप वहन न कर पाएं या वह आपके लिए सुविधाजनक न हो। जोखिम उठाने की अपनी क्षमता पहचानें।



निवेश की रणनीतियां

पोर्टफोलियो की विविधता का लक्ष्य अलग-अलग तरह की कंपनियों या उत्पादों में धन का निवेश करते हुए जोखिम को कम करना है और वह यह सुनिश्चित करता है कि यह धन विभिन्न अवसरों पर उपलब्ध होता रहे यानी एक ही टोकरी में सभी अंडे नहीं डाल दिए जाएं। आपको चाहिए कि अपने धन को अलग-अलग संस्थानों, विविध प्रकार के निवेशों और विभिन्न बाजारों में लगाएं फिर चाहे वह नकद हो, सावधि आय ऋणपत्र हों, कंपनियों के शेयर हों अथवा म्यूचुअल फंड।

यदि आप नियत ब्याज निवेशों में निवेश करते हैं, तो बुद्धिमानी होगी कि अपने धन को अलग-अलग जगह लगाएं ताकि आपके पास परिपक्वता राशि की अलग-अलग तारीख रहें। इससे उस हालात में जोखिम को कम किया जा सकेगा, जब ब्याज दरों में बदलाव होंगे। साथ ही इससे नियमित रूप से आय भी होती रहेगी। यदि आप अपने जोखिम को हमेशा अलग-अलग निवेशों में फैला कर रखते हैं, तो कई छोटे-छोटे निवेशों की निगरानी के लिए अधिक प्रयास की भी जरूरत पड़ेगी। ऊपर का आरेख यह दिखाता है कि किस प्रकार स्टॉक में सामान्य सी विविधता भी अव्यवस्थित जोखिम (ऐसा जोखिम जो व्यक्तिगत निवेश के लिए अहम है, को काफी कम कर देता है और उसे नियंत्रणीय स्तर तक पहुंचा देती है। विविधता के बगैर किसी उद्देश्य का प्रभाव नहीं रहता और इसलिए वह जोखिम को कम भी नहीं कर पाता। विविधता के बावजूद अगर कोई जोखिम सामने आता है तो वह या तो बाजार जोखिम की वजह से उत्पन्न होता है या फिर व्यवस्थित जोखिम की वजह से।)

परिसंपत्ति का वितरण

परिसंपत्ति का वितरण यह तय करने की प्रक्रिया है कि विभिन्न प्रकार के निवेशों (शेयर, बांड, रीयल इस्टेट इत्यादि) और बाजारों (ऋण, इक्विटी या उपभोक्ता) के लिहाज से किसी निवेश में कैसा समानुपात होना चाहिए। परिसंपत्ति का वितरण विविधता और प्रदर्शन दोनों में ही अभिवृद्धि करता है — हालांकि एक स्तर तक इसका उद्देश्य विरोध पैदा करना है। इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलती है कि निवेश बाजार और प्रतिभूतियों के एक बड़े क्षेत्र में फैल जाएगा और यह ऐसे बाजारों एवं प्रतिभूतियों में अधिक निवेश करने से रोकेंगा जिनकी गतिविधियां मजबूती के साथ एक-दूसरे से जुड़ी होंगी। परिसंपत्ति का वितरण ऐसे बाजारों या क्षेत्रों की पहचान करते हुए, जो संपूर्णता में उपेक्षित पड़े हुए हैं, प्रदर्शन को बढ़ा सकता है।

14. निवेश के साधन

सेवानिवृत्ति के बाद लोग दो प्रमुख कारणों से बचत करते हैं। पहला है अपनी आमदनी में होने वाली आकस्मिक कटौती या खर्चों को देखते हुए अपनी इच्छित जीवन शैली को सुरक्षित रखने की चाह। प्रत्येक सेवानिवृत्त व्यक्ति अपनी उसी जीवन-शैली को बनाए रखना चाहता है, जो सेवानिवृत्ति के पहले के दिनों में हुआ करती है। इसके लिए वह यह सुनिश्चित करना चाहता है कि सेवानिवृत्ति के बाद भी उसकी आय पर्याप्त रहे तथा उसकी सेवानिवृत्ति के पहले की आय के आस-पास ही रहे। जब कोई बूढ़ा हो जाता है तो उसकी स्वास्थ्य चिंताएं बढ़ जाती हैं। स्वास्थ्य सुरक्षा के खर्च भी उसके सामने खड़े हो जाते हैं। यदि सेवानिवृत्ति के पहले कोई नियमित स्वास्थ्य बीमा लेकर रखता है तो आगे चलकर वह स्वास्थ्य समस्याओं से उसका बचाव करता है। समय की मांग है कि तनख्वाह के विकल्प के रूप में नियमित आय का कोई ऐसा स्रोत रखा जाए, जो रोजमर्रा के खर्चों को पूरा कर सके। इसके लिए सेवा-निवृत्ति लाभों, जैसे कि भविष्य निधि, ग्रेजुएटि आदि के सतर्क विस्तार को माध्यम बनाया जा सकता है ताकि नियमित अंतराल पर ब्याज सहित धन उपलब्ध होता रहे।

पेंशन योजना

नियमित आमदनी के लिए पेंशन उत्पाद भी हमारे मददगार हो सकते हैं, यदि उन्हें जीवन के पुरुआती चरण में ही चुन लिया जाए। ऐसी योजनाएं सेवानिवृत्ति काल के दौरान नियमित पेंशन सुनिश्चित करती हैं। यदि किसी व्यक्ति ने अब तक ऐसी कोई योजना नहीं कि है तो भी वह किसी बीमाकर्ता द्वारा प्रस्तावित त्वरित पेंशन योजना ले सकता है किसी विशेष पेंशन योजना में आपको यह सहूलियत रहती है कि आप अपनी आय के वर्षों में एकमुष्ट भुगतान या सालाना नियमित अंशदान भी कर सकते हैं। इसके बाद आपके धन का आपके चुनाव के आधार पर ही किसी फंड में निवेश कर दिया जाएगा। निर्दिष्ट आयु (वह आयु जब आप पेंशन पाने के हकदार हो जाएंगे और जिसका चुनाव आपने योजना प्रारंभ करते वक्त किया था) के बाद आपको यह अधिकार होगा कि आप किसी भी समय एनुटी (वार्षिकी) प्राप्त कर सकते हैं। आज ज्यादातर उद्यम पेंशन योजनाओं से जुड़े हुए हैं और ये विभिन्न प्रकार के वार्षिकी विकल्पों के साथ सामने आ रहे हैं, जहां आपको सेवानिवृत्ति के बाद के लोगों को व्यवस्थित करने का मौका मिलता है। साथ ही परिपक्वता के वक्त आप अपनी संचित निधि का 33 प्रतिशत से भी अधिक कर मुक्त राशि एकमुष्ट प्राप्त कर सकते हैं।

निवेश से पहले संदर्भ नवीनतम कर-प्रावधानों को देख लें

केस स्टडी

रमण (59 वर्ष) छह महीने बाद की अपनी सेवानिवृत्ति की योजना बना रहा है जब वह 60 वर्ष का हो जाएगा। वर्तमान में उसकी सेवानिवृत्ति निधि लगभग 7,50,000 रुपये होगी। वह इसका उपयोग एक वार्षिकी खरीदने में करना चाहता है, और यह चाहता है कि कोई उसे आय प्रदान करें। एक नभामुक्त और किसी बड़ी स्वास्थ्य समस्या से रहित व्यक्ति के तौर पर अपने पेशे जीवन के लिए वह प्रतिवर्ष 45,000 रुपये या प्रतिमाह 3,750 रुपये की आय प्राप्त कर सकता है (6 प्रतिशत वार्षिक की दर के साथ)।

मासिक आय योजना

कोई व्यक्ति डाकघर अथवा बैंक की मासिक आय योजना भी ले सकता है। यह योजना भी नियमित आय सुनिश्चित करती है। डाकघर की मासिक आय योजना में वर्तमान आय की दर 8 प्रतिशत सालाना है।

अभ्यास

एक मिल मजदूर जॉर्ज 60 वर्ष की उम्र में सेवानिवृत्त होने जा रहा है। उसका सेवान्त लाभ (पीएफ, ग्रेच्युटी आदि को मिला कर) कुल 300,000 रुपये ठहरता है तथा उसके पास करीब 90,000 रुपये की बचत और निवेश भी है। जॉर्ज ने यह तय किया है कि वह अपनी बेटी की शादी के लिए अपने सेवांत लाभ की 25 प्रतिशत करमुक्त एकमुष्ट राशि लेगा। इस तरह से उसके पास जो 2,25,000 रुपये बचेंगे उन्हें वह निवेश करने की योजना बनाता है और उसने आय प्राप्त करना चाहता है।

कोई ऐसी मासिक आय योजना सुझाएं जो सुरक्षा, सरलता और आकर्षक लाभ सुनिश्चित करे।

म्यूचुअल फंड

- ☐ म्यूचुअल फंड आम तौर पर निवेशकों के एक समूह द्वारा व्यावसायिक रूप से संचालित निकाय है।
- ☐ एक म्यूचुअल फंड संचालक आपके पैसों को प्रतिभूतियों, स्टॉक और बॉण्ड, वित्त बाजार उपकरणों या इनके किसी सम्मिश्रण में निवेश करता है। यह निवेश वित्त के निवेश लक्ष्यों पर आधारित हुआ करता है।
- ☐ म्यूचुअल फंड में निवेश के द्वारा आप विविधता ला सकते हैं यह तीक्ष्ण रूप से आपकी जोखिम को कम कर देता है। म्यूचुअल फंड का वर्गीकरण बनावट के आधार पर किया जा सकता है।

ओपन-इंडेड स्कीम में किसी भी समय इकाइयां खरीदी और बेची जा सकती हैं जब फंड बेचा जाता है तब निवेशकर्ता खरीदते हैं और जब निवेशकर्ता विमोचित करते हैं तब फंड पुनः इकाइयों को खरीद लेता है। कय या विमोचन एनएवी (नेट एसेट वैल्यू) पर निर्भर करता है।

अंडर क्लोज-इंडेड स्कीम – ऑफर की समाप्ति के बाद निवेशकर्ताओं को फंड द्वारा इकाइयों को क़य या निश्क़य करने की अनुमति नहीं होती। क्लोज-इंडेड फंड स्टॉक एक्सचेंजों में सूचीबद्ध होते हैं ताकि निवेशकर्ताओं को इकाइयां क़य अथवा विक़य करने से रोका जा सके।

सिस्टमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी)

यह आपके धन का किसी म्यूचुअल फंड में निवेश करने की एक साधारण व अनुषासित रणनीति है। यह धन में वृद्धि करने की एक दीर्घकालिक रणनीति है। किसी एक मुफ्त निवेशकर्ता की तुलना में एसआईपी के जरिये निवेशकर्ता संभवतः लाभ की ज्यादा अच्छी दर प्राप्त करते हैं। एक एस आई पी में किसी निश्चित अवधि के लिए एक नियत राशि नियमित अंतराल में म्यूचुअल फंड में निवेश की जाती है, जो एक आवृत्ति जमा से काफी समानता रखता है। यह आपको बाज़ार के उतार-चढ़ाव का निषेध करते हुए प्रत्येक महीने फंड की इकाइयां खरीदने की स्वीकृति देता है। जहां आपका निवेश बरकरार रहता है, वहीं एक मंदी वाले बाज़ार में आप ज्यादा इकाइयां खरीद सकते हैं और किसी बढ़ते हुए बाज़ार में कम इस प्रकार जैसे ही आप एसआईपी का विकल्प लेते हैं, आप स्वाभाविक रूप से बाज़ार के उतार-चढ़ाव का हिस्सा बन जाते हैं। एसआईपी रुपये के औसत मान के सिद्धांत के अनुसार कार्य करता है। यह रुपये के औसत मान की स्थिरता सुनिश्चित करता है, उसी प्रकार का जिस प्रकार निवेश यह सुनिश्चित करता है कि प्रति इकाई औसत मान, औसत बाज़ार भाव की निचली पंक्ति के समानुरूप ही होगा। एसआईपी आम तौर पर कम से कम 500 रुपये की राशि से ही पुरु होता है और किसी इलेक्ट्रॉनिक क्लियरिंग सर्विस (ECS) के उपयोग की उच्चतम सीमा 25,000 रुपये प्रति निर्देश होती है।

एसआईपी की कार्यविधि

एसआईपी का एक अतिरिक्त लाभ यह है कि यह आपको बाज़ार की अटकलबाजी में बिना पड़े ही निवेश की स्वीकृति देता है। मान लिया कि आप हर महीने 500 रुपये की एक तय राशि का निवेश करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। जब बाज़ार तेज होता है तो फंड के समान एनएवी (छंअ) भी बढ़त लिए रहता है। उस समय आप 500 रुपये के अपने निवेश पर काफी कम इकाइयां प्राप्त करते हैं वही भी जब बाज़ार और सदृश एनएवी उतार पर होते हैं।

महीना	एनएवी	इकाइयों की संख्या(500/एनएवी)
1 जनवरी	10	50
1 फरवरी	10.25	48.780
1 मार्च	11	45.454
1 अप्रैल	12	41.667
1 मई	9.95	50.251
1 जून	12	41.667
		277.820

इस प्रकार मात्र 500 रु. प्रति महीने निवेश पर छह महीने के अंदर ही आपके पास 277.82 रुपये की इकाइयां होती हैं। यानी एक औसत छंअ (10.86) पर 6 महीने की अवधि में इकाइयां बेचना आपको लाभ ही देता है। नीचे दी गई तालिका 3000रुपये के निवेश पर आपको मिलने वाले लाभ को दर्शाती है। यदि आप इकाइयों को औसत से अधिक एनएवी पर बेचते हैं तब आपको प्राप्त होगा—

एनएवी (अ)	इकाइयां (आपके सभी इकाइयों के बेचने का पूर्वानुमान)(ब)	(एनएवी x 277.81) (सी)
10.86 (औसत)	277.81	3017.017
11	277.81	3055.91
12	277.81	3333.72
13	277.81	3611.53
14	277.81	3889.34

वर्षिकी (एनुटी) :-

वार्षिकी किसी बीमा कंपनी द्वारा बेचे गए वे करार हैं जो नियम अंतराल पर (आम तौर पर सेवा निवृत्ति के बाद) धारक को भुगतान उपलब्ध कराने के लिए तैयार किए गए हैं।

इसके अंतर्गत निर्दिष्ट आयु तक बगैर दंडशुल्क के आय का भुगतान नहीं हो सकता तथा उस पर कर केवल भुगतान के समय ही लगाया जाता है।

वार्षिकी तुलनात्मक रूप से सुरक्षित, निम्न-उत्पादक निवेश माने जाते हैं। वार्षिकी के अंतर्गत मृत्यु लाभ भी प्राप्त होते हैं जो वार्षिकी के वर्तमान अधिकतम मूल्य के समतुल्य होते हैं अथवा उतने होते हैं जितनी राशि खरीददार ने इसके लिए भुगतान की थी।

बीमा पॉलिसी

आपके जीवन और सम्पत्ति की अधिकांश जोखिमों को बीमा योजनाएं सुरक्षा देती हैं। कुछ सामान्य बीमा योजनाएं इस प्रकार हैं:-

- ☐ युनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान्स
- ☐ टर्मिनेट विद रिटर्न प्रीमियम प्लान्स
- ☐ स्वास्थ्य बीमा
- ☐ व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा
- ☐ घरधकार के लिए सुरक्षा बीमा
- ☐ परिवारिक जिम्मेदारियों की सुरक्षा का बीमा
- ☐ यात्रा बीमा

टापके द्वारा अपनाए गए बीमे का मूल्य सुरक्षा की अपकी जरूरतों पर निर्भर करता है। यदि आप सम्पत्ति के बीमे के लिए आवेदन करते हैं तो आदर्श रूप से बीमे का मूल्य आपकी सम्पत्ति के मूल्य के बराबर होगा। सामान्य रूप से किसी सावधि योजना की अंतिम अदायगी आपके परिवार की उस वित्तीय क्षति की भी क्षतिपूर्ति कर सकती है, जो आकस्मिक रूप से आपकी मृत्यु से उत्पन्न होगी। यदि आप यूलिय, स्थायी निधि या मनी बैंक पॉलिसियां लेते हैं, तो वे आपकी सम्पूर्ण वित्तीय योजना के साथ चलती हैं और उस वक्त आपको वित्त प्राप्त करने में सक्षम बनाती हैं जब आप उसका उपयोग करना चाहते हैं।

अभ्यास

श्री मुकेश कौशिक, जिनकी उम्र 58 वर्ष है, 10 लाख के अपने सेवांत लाभ का एक हिस्सा किसी ऐसे निवेश उत्पाद में लगाना चाहते हैं जो नियमित वार्षिक लाभ के साथ साथ उनके जीवन के बीमों की भी गारंटी करे। उनके लिए कौन सा निवेश उत्पाद उचित होगा।

स्वास्थ्य बीमा

भारत में स्वास्थ्य बीमे :- भारत में कई प्रकार के स्वास्थ्य बीमे अथवा चिकित्सा बीमे उपलब्ध हैं। प्रस्तावित किए जाने वाले बचाव के आधार पर उन्हें निम्नलिखित श्रेणियों में बांटा जा सकता है :-

कम्प्रीहेन्सिव हेल्थ इंश्योरेंस कवरेज :- यह योजना अस्पताल में रखवाने से लेकर आपको सम्पूर्ण स्वास्थ्य सुरक्षा उपलब्ध कराती है। साथ यह एक स्वास्थ्य वित्त का निर्माण भी करती है जो किसी अन्य इलाज के खर्च को बहन करता है।

होस्पिटलाइजेशन प्लान्स:- ये स्वास्थ्य बीमा योजनाएं उस समय आपके खर्चों को बहन करती हैं जब आपको अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है। इस श्रेणी के अंतर्गत व्यय के विभिन्न प्रकार के मदों के लिए उत्पाद के पास विभिन्न प्रकार की भुगतान विधियां और सीमाएं हो सकती हैं। होस्पिट लाइजेशन कवरेज अदायगी आधारित योजनाएं भी हो सकती हैं और नियत लाभ योजनाएं भी।

क्रिटिकल इलनेस प्लान्स:- ये स्वास्थ्य बीमा योजनाएं आपके गंभीर बीमारियों जैसे दिल का दौरा पड़ने, अंग प्रत्यारोपण, पक्षाघात और किडनी खराब होने पर सुरक्षा प्रदान करती हैं। इन योजनाओं का लक्ष्य असामान्य तथा बड़े चिकित्सा व्ययों को सुरक्षा देना होता है।

स्पेटिफिक कंडीशंस कवरेज:- यह योजना खास तौर से मधुमेह अथवा कैंसर के कारण उत्पन्न होने वाली जरूरतों के विरुद्ध स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराने के लिए तैयार की गई है। इसके साथ रोग नियंत्रण कार्यक्रम जैसी सुविधाएं भी जुड़ी हुई हैं जो परिस्थिति सुरक्षा के लिहाज से अहम हैं।

विशेष परिस्थितियों में बीमा कवरेज :- यह विशेष तौर स्वास्थ्य बीमा होता है। यह कुछ खास स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतों में लागू होता है। विशेष तौर पर यह कैंसर और डायबिटीज की बीमारी में सुरक्षा प्रदान करता है। इसमें खास परिस्थितियों में बीमारियों से संबंधित प्रबंधन कार्यक्रमों को शामिल किए जाते हैं।

रिवर्स मॉर्गेज :-

रिवर्स मॉर्गेज का उपयोग वरिष्ठ नागरिकों के लिए नकद आय के विकल्प के तौर पर किया जाता है ताकि उनकी वित्तीय जरूरतों की पूर्ति हो सके। यह वरिष्ठ नागरिकों को दिया जाने वाला ऐसा ऋण है जो उनकी आवासीय सम्पत्ति की इक्विटी को एक आय के स्रोत में बदल देता है। योजना के अंतर्गत कर्जदारों (वरिष्ठ नागरिकों) को अपनी आवासीय संपत्ति बैंक के पास बंधक के रूप में रखनी होती है और इसके बदले उन्हें जीवनकाल में एकमुश्त अथवा सावधिक भुगतान किया जाता है। गृहस्वामी के लिए अपने जीवनकाल में ऋण की अदायगी की बाध्यता नहीं होती। उनकी मृत्यु या स्थायी तौर पर घर छोड़ देने के बाद घर को बेच कर सभी ब्याजों के साथ ऋण की अदायगी कर ली जाती है। यदि कोई अतिरिक्त राशि बचती है तो वह कर्जदार अथवा उनके उत्तराधिकारी को वासप कर दी जाती हैं। इस एकमुश्त अथवा सावधिक भुगतान का उपयोग कर्जदार अपनी जरूरतों को पूरा करने में करते हैं। निश्चित रूप से रिवर्स मॉर्गेज वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक वित्तीय हेल्पलाइन है जो न केवल उनकी जीवनशैली को कायम रखने में सहायक है बल्कि रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के मामले में उन्हें आत्मनिर्भर भी बनाता है। इस ऋण की अवधि 15 वर्ष की है। ऋण की भुगतान तारीख तब आती है जब या तो कर्जदार की मृत्यु हो जाए या फिर वह अपने घर को बेचने/स्थायी तौर पर छोड़ने की इच्छा व्यक्त करें और शेष जीवन बिताने किसी आश्रम अथवा रिश्तेदारी में जाना चाहें। कुल ब्याज के साथ ऋण की अदायगी तभी सम्पन्न होती है जब आवासीय सम्पत्ति का विक्रय कर दिया जाता है। इस जायदाद के कर्जदार पास वह प्राथमिक अधिकार होता है कि वह चाहे तब सम्पत्ति को बेचे बिना ही व्याज समेत ऋण की अदायगी कर दें। अदायगी का समय आने के बाद आवास की बिक्री से पहले की अवधि भी प्रदान की जाती है।

अभ्यास :-

श्रीमति दियान्द्रा अगले पांच वर्षों में सेवानिवृत्त होने जा रही हैं। वह प्रति माह 15,000 रुपये की राशि किसी ऐसे उत्पाद में निवेश करना चाहती है जो उन्हें निम्नलिखित सहूलियतें दे सके:-

(अ) कर लाभ

(ब) ब्याजयुक्त आय

(स) किसी आपात की स्थिति के आने पर कभी भी समझौता भंग करने की सुविधा कौन सा निवेश उत्पाद उनके लिए उपयुक्त हो सकता है? क्यों?

निवेश के विकल्पों का तुलनात्मक विश्लेषण

	रिटर्न की दर	रिटर्न की दर	जोखिम	तरलता	कर लाभ	सुविधा
	वार्षिक आय	पूँजीगत लाभ				
वित्तीय सुरक्षा						
शेयर	निम्न	उच्च	उच्च	उच्च	हां	उच्च
अहस्तानांतरणीय डिबेंचर	मध्यम	निम्न	मध्यम	औसत	शून्य	उच्च
वित्तीय सुरक्षा (गैर-सुरक्षित)						
बैंक डिपॉजिट	निम्न	शून्य	निम्न	उच्च	हां	उच्च
प्रॉविडेंट फंड	शून्य	मध्यम	शून्य	निम्न	हां	उच्च
जीवन बीमा	शून्य	औसत	शून्य	निम्न	हां	उच्च
म्यूचुअल फंड्स						
वृद्धि & शेयर	निम्न	उच्च	उच्च	उच्च	हां	उच्च
आय & ऋण	मध्यम	औसत	निम्न	उच्च	हां	उच्च
रियल एसेट्स						
रियल इस्टेट	निम्न	मध्यम	निम्न	निम्न	शून्य	औसत
सोना & चांदी	शून्य	निम्न	औसत	औसत	शून्य	औसत

अतीत के अनुभव के आधार पर तालिका तैयार की गई है। इस तालिका में गारंटी की खोज नहीं करें। निवेशकों से यह गुजारिश की जाती है कि वह मंदी के दौर को ध्यान में रख कर निवेश करें क्योंकि निवेश एक जोखिम की विषय-वस्तु है।

15. निवेश के धोखों से बचाव

निवेश से संबंधित ऐसे कई धोखे हैं जो आपको फांस लेने की ताक में रहते हैं। उनसे बचने की कोशिश करें। उनमें से कुछ की चर्चा यहां की जा रही है।

अफवाहों या उकसाओं की अनदेखी करें

इसके अन्तर्गत आपको ऐसे ईमेल या संदेश प्राप्त होते हैं जिनमें किसी स्टॉक से संबंधित अविश्वसनीय सौदे की चर्चा रहती है और इसे सम्पूर्ण जीवन के लिए एक बारगी निवेश के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। वहां आप व्यक्ति या कंपनी से अनभिज्ञ होते हैं, जिसने स्टॉक की दलाली के लिए उसका बड़ा हिस्सा हथियाया हुआ है। जैसे ही निवेशकर्ताओं द्वारा भारी मात्रा में शेयरों की खरीद होती है उसका भाव आकाश छूने लगता है। भाव के एक बार चोटी पर पहुंचते ही माहिर घोटालेबाज अपने शेयर बेच डालते हैं और स्टॉक के भाव धराशाही हो जाते हैं। आपके पास केवल फालतू शेयर बच जाते हैं।

जोशीले मौके

इस तरह की धोखाधड़ी किसी ऐसे फोन कॉल अथवा संदेश से शुरू होती है जिसमें किसी प्राइवेट कंपनी के शेयर खरीदने का आग्रह किया जाता है और बताया जाता है कि संबंधित कंपनी एक प्रमुख स्टॉक एक्सचेंज में निबंधित होने वाली है। वे कहते हैं कि जैसे ही कंपनी एक बार सार्वजनिक होगी, इसके शेयर के भाव आसमान छूने लगेंगे। ऐसी कंपनियां आम तौर पर किसी ऐसे क्षेत्र से संबंधित होती हैं जो खबरों में होती हों।

हवाई या पिरामिडी स्कीम :-

निवेशकर्ताओं को विज्ञापनों या संदेशों के माध्यम से सम्मोहित करते हुए यह वादा किया जाता है कि आप “घर पर काम करते हुए लाखों कमाएं” या कि “ मात्र 1,00 रु. लगाएं और छह महीने के बाद 20,000 रुपये घर ले जाएं।” निवेशकर्ताओं से कहा जाता है कि वे बढ़-चढ़ कर पैसे जमा करवाएं। शुरुआती निवेशकर्ताओं को कई बार फौरन और साफ-सुथरे तरीके से “ चेक ” भी भेजे जाते हैं। उत्साह में आकर ये निवेशकर्ता अधिक से अधिक पैसे का निवेश प्रारंभ कर देते हैं या फिर अपने दोस्तों और स्वजन संबंधियों को भी नये निवेशकर्ताओं के तौर पर भर्ती करने लगते हैं। असल में तो इस निवेश का कोई अस्तित्व होता ही नहीं। ‘व्याज के चेक’ निवेशकर्ताओं की ही राशि से भुनाए जाते हैं या फिर नये निवेशकर्ताओं के सहयोग से यह योजना अंततः उस वक्त धराशाही हो जाती है जब बड़ी संख्या में नये निवेशकर्ता भागने लगते हैं। अंत में होता यह है कि ऐसे प्रचारक आपका पैसा लेकर रफूचक्कर हो जाता है।

अभ्यास:-

58 वर्षीय श्री आनंद शर्मा को किसी नई कंपनी का इस आशय का एक पत्र प्राप्त होता है कि यदि वे इस नवगठित कंपनी के आईपीओ में निवेश करें तो उन्हें पहले ही वर्ष में गारंटी के साथ 56 प्रतिशत की आय प्राप्त होगी। ऐसा भरोसा इस तर्क के साथ दिलाया जाता है चूंकि कंपनी एक तेजी से उभर रहे बायो-टेक्नोलॉजी क्षेत्र में अपना उद्यम लगा रही है इसलिए अगले तीन वर्षों में कंपनी के शेयर भावों में जबरदस्त तेजी आएगी। कंपनी कुशल कर्मियों के द्वारा संचालित की जाती है। कृपया सलाह दे कि श्री आनंद शर्मा को कंपनी में निवेश करने से पहले किसी तरह की सावधानियां बरतनी चाहिए। यह भी बताएं कि यदि आप उनकी जगत होते तो क्या इस कंपनी में निवेश करें?

16 संपत्ति योजना

संपत्ति योजना आपकी परिसंपत्तियों के प्रबंधन और संवर्द्धन की एक प्रक्रिया है जिसके तहत आपसी मृत्यु के पश्चात आपके उत्तरजीवियों को वह वसीयत के रूप में प्राप्त हो जाती है। सेवानिवृत्ति योजना का एक अहम हिस्सा है 'वसीयत' तैयार करना 'वसीयत' एक वसीयतकर्ता द्वारा अपनी संपत्ति को ध्यान में रख कर की गई वह कानूनी घोषणा है जिसके माध्यम से वह अपनी मृत्यु के बाद अपनी संपत्ति का भविष्य तक करता है। जब आप कोई वसीयत तैयार करते हैं तो यह भी तय कर देते हैं कि आपका प्रबंधन कौन होगा। इस एक या एक से अधिक व्यक्तियों को आप इस जिम्मेदारी के साथ नियुक्त करते हैं कि वे तब तक सभी मामलों का निष्पादन करते रहें जब तक आपकी सम्पत्ति आपके द्वारा मनोनीत लाभार्थियों के बीच वितरित न कर दी जाए। यह व्यक्ति आपके परिवार का सदस्य भी हो सकता है, या फिर एक दोस्त भी कि आपका वकील या अकाउंटेंट।

पावर ऑफ अटॉर्नी

पावर ऑफ अटॉर्नी एक ऐसा कानूनी दस्तावेज है जो किसी अन्य व्यक्ति को यह इजाजत देता है कि वह आपके बदले काम निष्पादित करे। यह दस्तावेज सुनिश्चित करता है कि संबंधित व्यक्ति आपका विश्वासपात्र है और यदि आप स्वयं किसी समझौते में भाग नहीं ले पाएँ तो उसे जरूरी मामलों को तय करने का अधिकार होगा।

नामांकन:-

यह बहुत आवश्यक है कि आप अपनी जीवन बीमा पॉलिसियों, बैंक जमा राशियों, शेयरों, म्यूचुअल फंड इकाइयों और अन्य सुरक्षा उपायों में अपने उत्तराधिकारी को मनोनीत करे ताकि मृत्यु जैसी परिस्थितियों में त्वरित भुगतान संभव हो सके।

अभ्यास

श्री राजेश जो अभी अभी सिकी निजी कंपनी से सेवा-निवृत्त हुए हैं, अपने सेवांत लाभ की राशि में से 5 लाख रुपये एक बैंक के जमा खाते में डालना चाहते हैं। उनका एक बेटा और दो बेटियाँ हैं। बैंक उनसे अनुरोध करता है कि वे अपने उत्तरजीवियों में से किसी एक को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत करें क्योंकि एक से अधिक मनोनयन स्वीकार्य नहीं होगा। श्री राजेश चाहते हैं कि उनकी मृत्यु के पश्चात उनके तीनों बच्चे आय प्राप्त करें। उनके लिए कानून में किसी तरह की सहायता उपलब्ध है।

अपने सेवानिवृत्त जीवन को समृद्ध करें:-

अपने सुनहरे दिनों को जीवित रखने तथा कामकाजी वर्षों की मेहनत का फल प्राप्त करने के लिए कुछ सुझाव यहां दिए जा रहे हैं।

अपनी रुचियों के अनुसार काम करते रहें।

दिलचस्प कामों में संलग्नता बढ़ाएं :-

वैसे बहुत सारे काम करने के लिए आप करते रहते होंगे, जिन्हें आप करना चाहते थे पर कर नहीं पाएँ। अपनी प्रतिभाओं का विस्तार करें और नई नई भाषाएं सीखें, बागवानी करें, कोई खेल खेलें, व्यायाम का अपने लिए कोई नियम बनाएं या अपनी रुचि के अनुसार ही कुछ काम शुरू करें।

संपर्क बढ़ाएं :- जीवन में बहुत सारे ऐसे व्यक्ति आपको मिले होंगे, जिनसे आप सम्पर्क बनाना चाहते होंगे, पर समय की कमी के चलते यह संभव नहीं हुआ होगा। क्या आप अभी ऐसा बहाना कर सकते हैं।

भ्रमण करें :- सेवानिवृत्ति का यह सबसे सुखद पहलू है। अब आप उन्मुक्त होकर भ्रमण करें और यह सोच-सोच कर दुखी हुए बिना जीवन के अनुभव ले कि आपकी अनुपस्थिति में आपके कार्यकाल में क्या चल रहा होगा। सेवानिवृत्त लोगों को ध्यान में रख कर भ्रमण के कई कार्यक्रम बनाए जाते हैं क्योंकि यही तो वह लोग हुआ करते हैं जिनके पास भ्रमण का सम्पूर्ण आनंद उठाने के लिए पर्याप्त समय और लगाव होता है।

स्वयंसेवी बनें :- अपने समय का सदुपयोग करने के अनगिनत विकल्प हो सकते हैं। अस्पतालों, प्राकृतिक शिविरों, स्कूलों, पुस्तकालयों, समुदायिक केंद्रों, कल्याणकारी परियोजनाओं आदि में श्रमदान करना प्रारंभ करें। इससे न केवल आपका जीवन समृद्ध होगा बल्कि दूसरों के लिए कुछ कर पाने का संतोष भी प्राप्त होगा। अपने जीवन के समृद्ध अनुभवों का दूसरों के जीवन को बेहतर बनाने में उपयोग करें।

कोई अंशकालिक नौकरी करें :- यदि आप कॉरपोरेट जगत के माहिर खिलाड़ी रहे हैं तो कहीं सलाहकर या साधनसेवी बन जाएं। यदि आप एक खिलाड़ी रहे हैं तो कोच बन सकते हैं, एक चिकित्साकर्मী रहे हैं तो अंशकालिक तौर पर कहीं सेवा दे सकते हैं, पढ़ने का काम करते हुए आप एक अतिथि विशेषज्ञ भी बन सकते हैं। सभी जानते हैं कि एक शिक्षक कभी सेवानिवृत्ति नहीं होता।

कोई व्यवसाय करें :- अगर कभी आपके मन में यह इच्छा रही है कि अपना बॉस खुद बनना चाहिए तो यही वह समय है जब आप अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। अपनी विशेषज्ञता और प्रतीति के अनुसार आप काफी कुछ कर सकते हैं। छोटी-सी शुरुआत करें और उसे बड़े स्तर तक ले जाएं। अपने उन सभी संपर्कों का इस्तेमाल करें, जिन्हें विगत वर्षों में आपने बनाये थे, और फिर देखें कि आपका साहस क्या कमाल कर दिखाता है।

17. सार—संक्षेप

- ☐ अभी शुरुआत करें, अपने वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करें।
- ☐ अपने सेवांत लाभों (भविष्य निधि, ग्रेच्युटी, बीमा पॉलिसी की स्थिति आदि) के बारे में पता लगाएं।
- ☐ एक निवेश योजना बनाएं और अपनी प्रगति की निगरानी करें।
- ☐ आय के लिए निवेश करें और अपनी आय को स्फीति के साथ बढ़ाने का प्रयास करें।
- ☐ अपने बकायों का भुगतान करने के लिए पर्याप्त वार्षिक आय का बन्दोबस्त रखें। किसी बरसाती किस्म के फंड को बनाये रखने से भी ऐसी असामान्य सा अनपेक्षित चीजों से निबट लिया जा सकता है।
- ☐ यदि कर चुकाने के बाद आपकी आय आपके खर्चों को बहन करने में समर्थ नहीं होती तो अपने जीवन स्तर को संतुलित करने की कोशिश करें।
- ☐ अपने समस्त वित्तीय स्रोतों को आप एक साथ कैसे नियंत्रित कर सकते हैं, इसकी योजना बनाएं।
- ☐ यह पता लगाएं कि क्या आपके जीवन से जुड़ी जरूरतों को पूरा करने के लिए आपका घर या कोई अन्य स्थायी सम्पत्ति आय का उत्पादन कर सकते हैं।
- ☐ कर से जुड़े उन सभी मुद्दों की नवीनतम जानकारी रखें जो किसी सेवानिवृत्त व्यक्ति को प्रभावित करने वाले हों।
- ☐ पता लगाएं कि दीर्घ आयु, स्फूर्ति और जीवनशैली में बदलावों जैसी जोखिमों का उपलब्ध बीमाओं एवं निवेश उत्पादों के माध्यम से आप किस प्रकार सामना कर सकते हैं।
- ☐ ध्यान रखें कि आपका निवेश कैसे काम कर रहा है, आय के लिए आपकी जरूरतें कैसे बदल रही हैं, वित्तीय बाजारों और उत्पादों में किस प्रकार के बदलाव आ रहे हैं, और किस प्रकार आपकी आय आपके लक्ष्यों को हासिल करने में मदद पहुंचा सकती है।

18. महत्वपूर्ण वेबसाइट

1. www.sebi.gov.in
2. www.rbi.org.in
3. www.amfiindia.com
4. www.investor.sebi.gov.in
5. www.nseindia.com
6. www.bseindia.com

© 2011 Pearson Education, Inc. or its affiliate(s). All rights reserved. Printed in the United States of America. This publication is protected by copyright. Any unauthorized distribution or reproduction of this work in any form or by any means without the prior written permission of Pearson Education, Inc. is prohibited. All other rights reserved.

[illegible]

Copyright © 2015 Wolters Kluwer Health | Lippincott Williams & Wilkins



भारतीय प्रत्याभूति और विनिमय बोर्ड

भविष्य की वित्तीय शिक्षा इस आधार पर दी जाएगी—

- १— स्कूली बच्चे
- २— महाविद्यालय छात्र
- ३— मध्य आय वर्ग
- ४— एकजीक्यूटिव
- ५— रिटायरमेंट योजना
- ६— घर बनाने वाले
- ७— स्वयं सहायता समूह

या नीचे दिए गए सिक््योरिटीज बाजार के किसी भी विषय पर —

- १— एक ऑफर दस्तावेज को कैसे पढ़ें?
- २— स्टॉक एक्सचेंज के माध्यम से प्राथमिक बाजार में कैसे निवेश करें?
- ३— सिक््योरिटीज का कारोबार कैसे करें या निवेशक गाइड लाइन
- ४— डी मैट अकाउंड और डिपॉजिटिरीज
- ५— म्यूचुअल फंड— क्या करें क्या ना करें?
- ६— सामूहिक निवेश योजनाएं— क्या करें क्या ना करें?
- ७— पैयर को खरीदना , सिक््योरिटीज को डी लिस्ट करना।
- ८— रेगुलेशन का अधिग्रहण
- ९— निवेशकों की शिकायतें—कैसे हल करें?

कृपया देखें—

उप जनरल मैनेजर

सेबी भवन, प्लॉट न. सी ४-ए,

जी ब्लॉक, बांद्रा कुरिया कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (ईस्ट), मुंबई-४०००५१

फोन-०६१-०२२२६४४६२१८

- ☐ निवेशक सेबी की बेवसाइट इनवेस्टर कंप्लेंट्स/सेबी.जीओवी.इन (investorscomplaint@sebi.gov.in) पर भी अपनी शिकायतें दर्ज करा सकते हैं।
- ☐ निवेशक निवेश संबंधी किसी भी सहायता के लिए भी सेबी की बेवसाइट पर जा सकते हैं। इसका लिंक इस तरह से है 'आस्कसेबी/सेबी.जीओवी.इन (asksebi@sebi.gov.in)

भारत में सेबी के कार्यालयों की सूची

मुख्य कार्यालय

सेबी भवन

प्लॉट न. सी ४-ए, जी ब्लॉक, बांद्रा कुरिया कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (ईस्ट), मुंबई-४०००५१

टेलीफोन- ९१-२२-२६४४६०००, ४०४५६०००, ९११४

फैक्स- ९१-२२-२६४४६०२७, ४०४५६०२७

ई मेल- sebi@sebi.gov.in

(महाराष्ट्र , मध्य प्रदेश, छत्तीस गढ़, गोवा, दीव, दमन, दादरा और नगर हवेली)

उत्तरी क्षेत्रीय कार्यालय ५ वीं मंजिल, बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग, १६ संसद मार्ग नई दिल्ली- ११०००१ टेलीफोन न.-९१-०११-२३७२४००१-०५ , फैक्स -९१-०११-२३७२४००६ ई मेल- sebinro@sebi.gov.in (हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर पंजाब , उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़, उत्तराखंड और दिल्ली)	दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय डी मोंटे बिल्डिंग, तीसरी मंजिल, ३२ डी मोंटे कालोनी, टीटीके रोड अलवर पत, चेन्नई-६०००१८ टेलीफोन न.-९१-४४-२४६७४०००, २४६७४१५० फैक्स- ९१-४४-२४६७४००१ ई मेल- sebisro@sebi.gov.in (आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, पांडीचेरी, लक्षद्वीप और मिनीकोय द्वीप समूह)
पूर्वी क्षेत्रीय कार्यालय एल एंड टी चौबंर, तीसरी मंजिल, १६ कामक स्ट्रीट, कोलकाता- ७०००१७ टेलीफोन- ९१-३३-२२८७४३०७ ई मेल- sebiero@sebi.gov.in (आसाम, बिहार, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, उड़ीसा पश्चिम बंगाल, अरुणाचल प्रदेश मिजोरम, त्रिपुरा, सिक्किम, झारखंड, अंदमान और निकोबार द्वीप समूह)	पश्चिमी क्षेत्रीय कार्यालय यूनिट न.-००२, ग्राउंड फ्लूस सकर-१, नियर गांधी ग्राम रेलवे स्टेशन, अपोजिट नेहरू ब्रिज, आश्रम रोड अहमदाबाद-३ ८०००६ टेलीफोन न.- ९१-०७९-२६५८३६३३-३५ फैक्स-९१-०७९-२६५८३६३२ ई मेल- sebiaro@sebi.gov.in (गुजरात और राजस्थान)

भारतीय प्रत्याभूति और विनियम बोर्ड

